सांध्य दैनिक
4PM
जिद...सच की
www.4pm.co.in www.facebook.com/4pmnewsnetwork @Editor_Sanjay YouTube @4pm NEWS NETWORK
● वर्ष: 10 ● अंक: 19 ● पृष्ठ: 8 ● लखनऊ, मंगलवार, 20 फरवरी, 2024
मूल्य ₹ 3/-

महान सपने देखने वालों के महान सपने हमेशा पूरे होते हैं।
-अब्दुल कलाम

कुमारस्वामी राज्यसभा चुनाव के लिए... 2 | जातिगत जनगणना का मुद्दा पार... 3 | एनआरसी लाने से पहले पश्चिम... 7

भारत का किसान बजट पर बोझ नहीं : राहुल

बोले- एमएसपी की गारंटी से कृषि में बढ़ेगा निवेश

» किसानों की अनदेखी पर मोदी सरकार पर जमकर बरसे कांग्रेस सांसद
» किसान हैं जीडीपी ग्रोथ के सूत्रधार
» आज लखनऊ में ही रहेगी भारत जोड़ो न्याय यात्रा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। लोकसभा चुनावों से पहले देश का सियासी तापमान चढ़ा हुआ है। इस बीच देश के आम चुनावों की दृष्टि से सबसे अहम राज्य उत्तर प्रदेश में भी सियासत गरमाई हुई है। कांग्रेस सांसद राहुल गांधी की भारत जोड़ो न्याय यात्रा भी इस समय उत्तर प्रदेश में ही बनी हुई है। यूपी में राहुल की यात्रा वाराणसी, प्रतापगढ़, अमेठी और रायबरेली होते हुए आज प्रदेश की राजधानी लखनऊ में पहुंची। अपनी यात्रा के दौरान राहुल गांधी लगातार आम जनमानस से मिल रहे हैं, उनसे संवाद कर रहे हैं और उनकी समस्याओं को सुन रहे हैं।

साथ ही वो लगातार देश के युवाओं के साथ हो रहे अन्याय का मुद्दा भी उठा रहे हैं और सत्ता में आने पर देश में जाति जनगणना की बात भी कर रहे हैं। राहुल गांधी अपनी यात्रा के दौरान लगातार पिछड़ों, दलितों व आदिवासियों के हक की बात करते हुए देश की मोदी व प्रदेश की योगी सरकार पर निशाना साध रहे हैं। आज भारत जोड़ो न्याय यात्रा के 38वें दिन अमेठी से शुरू हुई यात्रा रायबरेली होते हुए शाम को राजधानी लखनऊ पहुंच जाएगी। इस बीच कांग्रेस सांसद राहुल गांधी ने अपनी मांगों को लेकर सड़क पर उतरे किसानों के हक की बात करते हुए देश की मोदी सरकार पर निशाना साधा। राहुल ने कहा कि न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) की गारंटी से भारत का किसान बजट पर बोझ नहीं बल्कि जीडीपी ग्रोथ का सूत्रधार बनेगा।

लखनऊ पहुंची भारत जोड़ो न्याय यात्रा

14 जनवरी को मणिपुर से शुरू हुई राहुल गांधी की भारत जोड़ो न्याय यात्रा का आज 38वां दिन है। यात्रा 14 फरवरी से उत्तर प्रदेश में बनी हुई है। यूपी में राहुल अब तक वाराणसी, प्रतापगढ़ और अमेठी में अपनी यात्रा लेकर निकल चुके हैं। आज यात्रा का पुनः प्रारंभ अमेठी के फुरसतगंज से ही हुआ। इसके बाद यात्रा रायबरेली पहुंची। जहां डिग्री कॉलेज चौराहा-अम्बेडकर चौराहा और सुपरमार्केट होते हुए आगे बढ़ी। इस दौरान एक जनसभा को भी संबोधित किया। इसके बाद तय कार्यक्रम के अनुसार यात्रा आज करीब 3 से 4:30 बजे के करीब उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ पहुंची। जहां शाम 6 बजे राहुल एक सार्वजनिक सभा को भी आयोजित करेंगे। उसके बाद आज यात्रा का विश्राम भी लखनऊ में ही होगा।

जब करोड़ों के बैंक लोन माफ किए जा सकते हैं तो किसानों पर खर्च क्यों नहीं किया जा सकता

कांग्रेस सांसद ने कहा कि जिस देश में 14 लाख करोड़ रुपये के बैंक लोन माफ कर दिए गए हों, 1.8 लाख करोड़ रुपये कॉर्पोरेट टैक्स में छूट दी गई हो, वहां किसान पर थोड़ा सा खर्च भी इनकी आंखों को क्यों खटक रहा है? कांग्रेस नेता ने कहा कि एमएसपी की गारंटी से कृषि में निवेश बढ़ेगा, ग्रामीण भारत में डिमांड बढ़ेगी और किसान को अलग-अलग किस्म की फसलें उगाने का भरोसा भी मिलेगा, जो देश की समृद्धि की गारंटी है। उन्होंने कहा कि जो न्यूनतम समर्थन मूल्य पर भ्रम फैला रहे हैं, वो डॉ. स्वामीनाथन और उनके सपनों का अपमान कर रहे हैं। एमएसपी की गारंटी से भारत का किसान, बजट पर बोझ नहीं बल्कि जीडीपी ग्रोथ का सूत्रधार बनेगा। इतना ही नहीं राहुल गांधी ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की एक वीडियो भी पोस्ट की है, जिसमें वह स्वामीनाथन फॉर्मूले के आधार पर किसानों को उनकी फसलों की दर देने के पार्टी के संकल्प के बारे में बात कर रहे हैं।

एमएसपी पर झूठ फैला रही मोदी सरकार

राहुल गांधी ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर दावा करते हुए लिखा कि जब से कांग्रेस ने एमएसपी की कानूनी गारंटी देने का संकल्प लिया है, तब से मोदी के प्रचारतंत्र और मित्र मीडिया ने एमएसपी पर झूठ की झड़ी लगा दी है। उन्होंने आगे कहा कि यह झूठ है कि एमएसपी की कानूनी गारंटी दे पाना भारत सरकार के बजट में संभव नहीं है। बल्कि सच यह है कि क्रेडिट रेटिंग इंफॉर्मेशन सर्विसेज ऑफ इंडिया लिमिटेड यानी क्रिसिल के अनुसार 2022-23 में किसान को एमएसपी देने में सरकार पर 21,000 करोड़ रुपये का अतिरिक्त भार आता, जो कुल बजट का मात्र 0.4 फीसदी है।

2018 के मानहानि मामले में मिली राहत

राहुल गांधी को 2018 के मानहानि मामले में आज जमानत मिल गई है। उन्हें 25-25 हजार की सिक्योरिटी और 25 हजार के बेल बॉन्ड पर जमानत मिली है। एमपी-एमएलए की विशेष कोर्ट के मजिस्ट्रेट योगेश कुमार यादव ने राहुल की जमानत अर्जी मंजूर कर 25-25 हजार रुपए के दो जमानतनामा दाखिल करने पर रिहा करने का आदेश दिया। राहुल आज उत्तर प्रदेश के सुल्तानपुर के स्थानीय कोर्ट में पेश हुए। उन्होंने कोर्ट से कहा कि वे इस मामले में निर्देष हैं। बता दें कि उन्हें मानहानि से जुड़े एक मामले में सुल्तानपुर की अदालत ने तलब किया था। मामला करीब 6 साल पुराना है। दरअसल, राहुल ने 2018 में गृहमंत्री अमित शाह के खिलाफ एक टिप्पणी की थी। इस टिप्पणी को मानहानि का मामला बताते हुए बीजेपी नेता विजय मिश्रा ने केस दर्ज कराया था। इस मामले में ही आज सुनवाई हुई। मामले में अगली सुनवाई 2 मार्च को होगी।

सपा से नहीं बनी सीट शेयरिंग पर बात

एक ओर राहुल गांधी यूपी में अपनी यात्रा निकाल रहे हैं, दूसरी ओर इंडिया गठबंधन को एक और झटका लगने की खबर सामने आ रही है। ऐसी खबरें आ रही हैं कि सपा और कांग्रेस के बीच सीट शेयरिंग पर बात नहीं बन पाई है। जिसके चलते अब सपा-कांग्रेस का गठबंधन नहीं हो सकेगा। अब दोनों ही पार्टी राज्य की सभी सीटों पर चुनाव लड़ेंगी। जाहिर है कि बीते लंबे वक्त से सपा और कांग्रेस के बीच सीटों को लेकर बातचीत चल रही थी। लेकिन अंत में दोनों ही पार्टियों के बीच बात नहीं बन पाई है। जानकारी के मुताबिक, सपा के ओर से कांग्रेस को कुल 17 सीटों का ऑफर दिया गया था। लेकिन कांग्रेस 20 से कम सीटों पर बात करने के लिए तैयारी नहीं थी। इसके लिए कांग्रेस के ओर सपा को एक लिस्ट भी दी गई थी। लेकिन अंत में बात नहीं बन पाई।

लाभ लेकर सभी चले जाते हैं : अखिलेश

» सपा प्रमुख ने स्वामी प्रसाद पर कसा तंज

» बोले- संविधान को बचाने का है 2024 का लोस चुनाव

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

भाजपा ने सबसे ज्यादा धोखा गरीब को दिया

लखनऊ। लोकसभा चुनाव से ठीक पहले उत्तर प्रदेश में सियासी पारा काफी चढ़ा हुआ है। चर्चा में बनी हुई है प्रदेश की मुख्य विपक्षी पार्टी समाजवादी पार्टी और उसके मुखिया अखिलेश यादव। एक ओर सपा और कांग्रेस के बीच सीट शेयरिंग को लेकर मामला फंसता जा रहा है, तो वहीं दूसरी ओर सपा से उसके नेताओं की नाराजगी भी अखिलेश यादव की चिंता बढ़ा रही है। स्वामी प्रसाद मौर्य के पहले महासचिव पद से इस्तीफा देने और बाद में अब अपनी खुद की नई पार्टी का ऐलान करने के बाद सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने स्वामी प्रसाद मौर्य पर करारा हमला बोला है।

स्वामी प्रसाद मौर्य की दूसरी पार्टी बनाने की खबरों पर सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने कहा कि किसी के मन में क्या है? यह कौन सी मशीन बताएगी? लाभ लेकर तो सब चले जाते हैं। आचार्य नरेंद्र देव की समाधि स्थल पर उनको श्रद्धांजलि देने के बाद अखिलेश यादव ने यूपी सरकार पर निशाना साधते हुए कहा कि लगभग 60 लाख नौजवानों ने पुलिस भर्ती की परीक्षा दी है। जो सुनने में मिल रहा है कि पेपर लीक हुआ है। हर परीक्षार्थी के घर से पांच लोग जुड़े हैं। जो लोग कह रहे हैं कि परीक्षा कड़ी सुरक्षा में हुई है, यह ढाई करोड़ परिवारों के साथ धोखा है।

सपा प्रमुख ने कहा कि वर्ष 2024 संविधान को बचाने का चुनाव है, इस देश के भविष्य को बचाने का चुनाव है। गंगा जमुनी तहजीब को बचाने का चुनाव है। समाजवादी लोगों की जिम्मेदारी बड़ी है क्योंकि भाजपा से सबसे ज्यादा धोखा गरीबों को दिया है। ग्राउंड ब्रेकिंग सेरेमनी आज से छह महीने पहले क्यों नहीं हुई? अगर इन्होंने बजट में पैसा रखा होता तो उद्योगपति पहले भी आ सकता था। चुनाव आ गया है इसीलिए लगभग पचास लाख बच्चों से परीक्षा दिलवा रहे हैं, चुनाव आ गया है वोट चाहिए इसीलिए ग्राउंड ब्रेकिंग सेरेमनी हो रही है। इससे पहले कितना निवेश आया है और उससे कितने नौजवानों को नौकरी और रोजगार मिले हैं? यह सरकार रहेगी तो बाबा साहब भीमराव अंबेडकर का आरक्षण बचाने का जो आंदोलन रहा है, उसे पूरा समाप्त कर देगी। चंडीगढ़ मेयर चुनाव को लेकर सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने भाजपा पर फिर निशाना साधते हुए कहा कि चंडीगढ़ मेयर चुनाव में पीठासीन अधिकारी द्वारा चुनाव में धांधली करने का जुर्म स्वीकार करना दिखाता है। उन्होंने ये भी लिखा कि भाजपा किस तरह से सत्ता की भूखी है। वैधानिक और सांविधानिक आधार पर भाजपा को पूरे देश से माफी मांगकर हर जगह सत्ता छोड़ देनी चाहिए। अखिलेश ने यह भी लिखा कि सरेआम लोकतंत्र की हत्या जैसे इस शर्मनाक कृत्य के लिए भाजपा समर्थकों को सिर झुका लेना चाहिए। उन्हें समझ लेना चाहिए कि भाजपा किस प्रकार हर चुनाव चोरी और घपलों से जीत रही है। ऐसे लोगों के हाथ में न देश सुरक्षित है न उनका अपना वर्तमान और न ही उनके बच्चों का भविष्य। आज का दिन भाजपाई समर्थकों के लिए नैतिक-शोक का दिन है। दरअसल, पीठासीन अधिकारी ने सुप्रीम कोर्ट में स्वीकार किया है कि उन्होंने बैलट पेपर पर क्रास के निशान लगाए थे।

स्वामी का पलटवार, कहा- अखिलेश की बात उन्हें ही मुबारक

वहीं सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव के लाभ लेकर तो सभी चले जाते हैं' वाले बयान पर स्वामी प्रसाद मौर्य ने पलटवार करते हुए कहा कि विपक्ष में रहकर शेखचिल्ली बघारना ठीक नही है। अखिलेश की कही हुई बात उन्हें ही मुबारक। ये सब जानते हैं कि वो सरकार में नही हैं, उनकी सरकार न तो केंद्र में है और न ही प्रदेश में है, कुछ देने की हैसियत में नही है। उन्होंने जो भी दिया है वह मैं उन्हें सम्मान के साथ वापस कर दूंगा। स्वामी ने कहा कि मेरे लिए पद नहीं विचार मायने रखता है। स्वामी प्रसाद ने आगे कहा कि दलितों, आदिवासियों, पिछड़ों, किसानों और देश की महिलाओं पर जब भी आघात हुआ मैंने प्रतिवाद किया है। स्वामी प्रसाद सपा के राष्ट्रीय प्रमुख महासचिव प्रो. रामगोपाल यादव से भी खासे नाराज दिखे। कहा कि उनकी भाषा में न सम्मान है न बातचीत का सलीका और तरीका आता है। स्वामी ने आगे कहा कि जब सपा के संगठन में ही भेदभाव है, एक राष्ट्रीय महासचिव का हर बयान निजी हो जाता है। जब एक ही पद के लोगों में भेदभाव है और मैं भेदभाव के खिलाफ ही लड़ाई लड़ता हूं तो ऐसे पद पर रहने का औचित्य क्या है?

मोदी ने बदली उद्योगपतियों-राजनेताओं के गठजोड़ की धारणा : राजनाथ सिंह

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

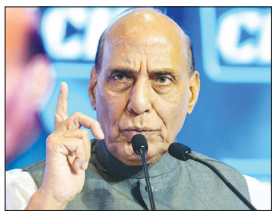

लखनऊ। रक्षामंत्री राजनाथ सिंह ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को विश्व का दूरदर्शी नेता बताते हुए कहा कि उन्होंने उद्योगपतियों और राजनेताओं के बीच गठजोड़ की अवधारणा को बदलते हुए देश में विकास की बयार ला दी है।

उन्होंने कहा कि एक दशक पहले तक राजनेताओं और उद्योगपतियों के बीच गठजोड़ को संदेह की नजर से देखा जाता था और खतरे की घंटी माना जाता था लेकिन मोदी ने गुजरात के मुख्यमंत्री पद पर रहते हुए इस धारणा को बदलना शुरू कर दिया था और उद्योगपतियों की मदद से गुजरात में विकास की गंगा बहा दी थी और अब जब मोदी देश का नेतृत्व कर रहे हैं तो उद्योगपति और राजनेता मिलकर देश के विकास को गति देने का काम कर रहे हैं जिसकी चर्चा देश में ही नहीं बल्कि पूरे विश्व में हो रही है। राजनाथ ने कहा कि मोदी के मार्गदर्शन में उत्तर प्रदेश के कर्मयोगी मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ प्रदेश के विकास के लिये प्रतिबद्ध है। योगी सरकार ने जो प्रयास किये है उसकी परिणित आज आयोजित हो रही ग्राउंड ब्रेकिंग सेरेमनी है।

कुमारस्वामी राज्यसभा चुनाव के लिए दे रहे हैं ऑफर : शिवकुमार

» डिप्टी सीएम का आरोप- कांग्रेस विधायकों को मिली धमकी

» कहा- देखते हैं कौन किसे वोट देता है

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

बंगलूरू। राज्यसभा की खाली हो रही 56 सीटों के लिए 27 फरवरी को चुनाव होंगे। इनमें से चार सीट कर्नाटक में हैं। इस बीच, उप मुख्यमंत्री डीके शिवकुमार ने जेडीएस नेता एचडी कुमारस्वामी पर बड़ा आरोप लगाया है। उन्होंने कहा कि उनके पास जानकारी है कि कुमारस्वामी इस चुनाव में कांग्रेस विधायकों के वोट खरीदने की पेशकश कर रहे हैं।

शिवकुमार ने बंगलूरू में कहा कि हम जानते हैं कि कुमारस्वामी किसे फोन कर रहे हैं। वह क्या बोले हैं और क्या पेशकश कर रहे हैं। हमारे विधायकों ने हमें सारी जानकारी दी है। हम भाजपा की रणनीति से अच्छी तरह वाकिफ हैं। पत्रकारों ने उप मुख्यमंत्री से जब पूछा गया कि क्या विपक्षी दल क्रॉस वोटिंग का प्रयास कर रहे हैं? इस पर उन्होंने कहा कि क्या उन्होंने बेवजह उम्मीदवार खड़ा किया है? उन्होंने अपना उम्मीदवार मैदान में उतारा है। देखते हैं कि मतदान के दिन कौन किसे वोट देता है। उप मुख्यमंत्री ने आगे कहा कि एचडी कुमारस्वामी ने बात की है। कांग्रेस विधायकों को पेशकश की है। विधायक मेरे पास आए और मुझे बताया कि उन्होंने उन्हें धमकी दी थी। मुझे इसकी जानकारी है। मैं अब इस पर कुछ नहीं बोलूंगा। जाहिर है कि पूर्व प्रधानंत्री एचडी देवगौड़ा के नेतृत्व वाली जद (एस) पार्टी पिछले भाजपा नीत राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) में शामिल हो गई थी।

तीन सीट पर कब्जा जमा सकती है कांग्रेस

राज्य की 224 सदस्यीय विधानसभा में सत्तारूढ़ कांग्रेस के पास 135 विधायक हैं। वह सर्वोदय कर्नाटक पक्ष पार्टी के दर्शन पुत्तनैया और दो निर्दलीय उम्मीदवारों के समर्थन से राज्यसभा की तीन सीट पर अपना कब्जा बरकरार रख सकती है। वहीं, विधानसभा में भाजपा के 66 और जद (एस) के 19 सदस्य हैं। वे गठबंधन में एक सीट जीतने की स्थिति में हैं। कांग्रेस ने अजय माकन, सैयद नसीर हुसैन और जीसी चंद्रशेखर को उम्मीदवार बनाया है। जबकि भाजपा ने पूर्व एमएलसी नारायणसा बंदेज को उम्मीदवार बनाया है।

अब्दुल्ला पिता-पुत्र को पता था हटेगा आर्टिकल 370 : आजाद

» बोले- नेकां के नेता रात में मोदी और शाह से करते हैं मुलाकात

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

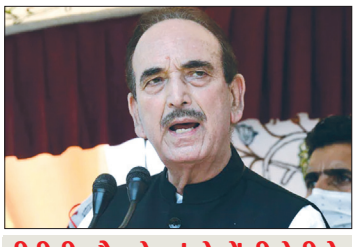

नई दिल्ली। कई वर्षों तक कांग्रेसी रहे और अब अपनी ही डेमोक्रेटिक प्रोग्रेसिव आजाद पार्टी चलाने वाले गुलाम नबी आजाद ने पूर्व सीएम उमर अब्दुल्ला और फारूक अब्दुल्ला को लेकर बड़ा दावा किया है। आजाद ने कहा कि जम्मू-कश्मीर के पूर्व सीएम उमर अब्दुल्ला और फारूक अब्दुल्ला रात के वक्त पीएम नरेंद्र मोदी से मुलाकात करते हैं। ऐसा इसलिए किया जाता है ताकि वे मीडिया और जनता की नजर से बच सकें।

गुलाम नबी ने कहा कि ये दोनों नेता रात को पीएम मोदी और अमित शाह से मिलने जाते हैं। उन्होंने कहा कि अब्दुल्ला पिता-पुत्र श्रीनगर में कुछ कहते हैं और जम्मू में कुछ और। दिल्ली जाते हैं तो एकदम अलग भाषा होती है।

पीडीपी और नेकां दोनों बीजेपी के साथ सरकार बनाना चाहते थे

गुलाम नबी आजाद ने दावा किया कि भाजपा ने जब पीडीपी के साथ मिलकर जम्मू-कश्मीर में सरकार बनाई थी तो उस वक्त नेशनल कॉन्फ्रेंस ने भी साथ जाने की कोशिश की थी। डबल गेम खेलने का आरोप लगाते हुए गुलाम नबी आजाद ने कहा कि पीडीपी और एनसी दोनों ने ही भाजपा संग सरकार में जाने की कोशिश की थी। गुलाम नबी आजाद ने एक और दावा किया और कहा कि आर्टिकल 370 हटाने से पहले अब्दुल्ला पिता-पुत्र को फैसले की जानकारी दी गई थी। उन्होंने कहा कि 3 अगस्त, 2019 को एक मीटिंग पीएम मोदी और अब्दुल्ला के बीच हुई थी। आजाद ने कहा कि तब यह चर्चाएं थीं कि पीएम मोदी की ओर से अब्दुल्ला पिता-पुत्र को भरोसे में लिया गया है। इसके अलावा इन दोनों नेताओं ने ही पीएम नरेंद्र मोदी को सुझाव दिया था कि वह घाटी में नेताओ को नजरबंद करा दें।

जातिगत जनगणना का मुद्दा पार लगाएगा कांग्रेस की नैय्या!

पिछले साल हुए विधानसभा चुनावों में नहीं दिखा था कोई असर

» राहुल गांधी लगातार इसी मुद्दे पर दे रहे हैं जोर, उठा रहे ओबीसी की बात

» जातिगत जनगणना पर विपक्षी एकजुटता बढ़ा सकती है बीजेपी की मुश्किलें

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। हर बीतते दिन के साथ देश का लोकसभा चुनाव करीब आता जा रहा है। इसीलिए देश में सियासी हलचल काफी तेज हो गई है। आए दिन सियासी घटनाक्रम बदल रहे हैं। और सियासत एक नया करवट ले रही है। फिर वो चाहे बिहार में हुआ सत्ता परिवर्तन हो या फिर झारखंड में सीएम की गिरफ्तारी के बाद मुख्यमंत्री का बदलना। ये सब चुनावी साल का ही असर है। अब लोकसभा चुनावों में सिर्फ 2 से तीन महीने का ही समय बाकी रह गया है। इसलिए सभी राजनीतिक दलों ने अपनी-अपनी योजनाओं पर काम करना शुरू कर दिया है। भाजपा जहां अबकी बार 400 पार के नारे के साथ आगे बढ़ रही है। तो वहीं दूसरी ओर विपक्ष है जो भाजपा को सत्ता में आने से रोकने के लिए लगातार लगा हुआ है। लेकिन अब जब चुनावों में वक्त काफी कम बचा है तो राजनीतिक दलों ने अपने-अपने एजेंडे और मुद्दे भी सेट करने शुरू कर दिए हैं।

एक ओर भाजपा है जो सिर्फ राम मंदिर और भगवान राम के भरोसे ही इस बार के लोकसभा चुनाव में उतरी है। इसके अलावा उसके पास मुद्दों का अभाव होने के कारण भाजपा विपक्ष और विपक्षी नेताओं को ही डराने व धमकाने का काम कर रही है। ऐसे में सवाल ये ही उठता है कि 10 साल सत्ता में रहने के बाद भी भाजपा के पास न तो अपने मुद्दे हैं और न ही अपना कोई काम है जिसको लेकर वो जनता के बीच में जा सके। ऐसे में भाजपा सिर्फ राम मंदिर और विपक्ष को दबाने के मुद्दे पर ही काम कर रही है। तो वहीं दूसरी ओर है मुख्य विपक्षी दल कांग्रेस, जो इस बार काफी तैयारी के साथ आगे बढ़ रही है। कांग्रेस का मकसद इस बार भाजपा को सत्ता के सिंघासन से दूर रखना है। इसके लिए कांग्रेस आम जनता के बीच में अपनी पकड़ बनाना चाह रही है और इसके लिए जनता के बीच में जाकर लोगों से मिलने का प्लान बना रही है। इसी योजना पर कांग्रेस सांसद राहुल गांधी आगे बढ़ रहे हैं। वो अपनी भारत जोड़ो न्याय यात्रा को लेकर देश के अलग-अलग हिस्सों में जा रहे हैं। जहां वो आम लोगों से मिल रहे हैं, उनकी समस्याओं को सुन रहे हैं और उनके हितों की बात कर रहे हैं। भारत जोड़ो न्याय यात्रा के जरिए कांग्रेस का मकसद सिर्फ आमजन तक अपनी पकड़ को बनाना और जन-जन तक अपनी बात को पहुंचाना है। अपनी इसी यात्रा के दौरान कांग्रेस ने 2024 के लोकसभा चुनाव के लिए अपना एजेंडा व अपना मुद्दा भी लगभग तय ही कर लिया है। कांग्रेस 2024 में जातिगत जनगणना के मुद्दे पर आगे बढ़कर खेलना चाह रही है। जिस तरह से राहुल गांधी लगातार जातिगत जनगणना और ओबीसी व दलितों की हिस्सेदारी की बात कर रहे हैं, उससे तो साफ यही लगता है कि कांग्रेस ने तय कर लिया है कि वो लोकसभा चुनावों में जाति आधारित जनगणना को ही अपना सबसे बड़ा मुद्दा बनाएगी और इसी मुद्दे को लेकर चुनावों में आगे बढ़ेगी। कांग्रेस पूरी तरह से जातिगत जनगणना के मुद्दे पर ही अब आगे बढ़ रही है। बेशक जातिगत जनगणना के मुद्दे का कांग्रेस को राजस्थान, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ विधानसभा के चुनावों में कोई फायदा नहीं मिला। पिछले साल के अंत में हुए इन राज्यों के विधानसभा चुनावों में भी कांग्रेस ने जातिगत जनगणना के मुद्दे को काफी धार दी और राज्यों में सत्ता में आने पर जातिगत जनगणना कराने का वादा भी किया, लेकिन फिर भी चुनावों में इस मुद्दे का असर देखने को नहीं मिला। नतीजन कांग्रेस को राजस्थान, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ तीनों ही राज्यों में हार का सामना करना पड़ा। हालांकि, जिस एक तेलंगाना राज्य में कांग्रेस सत्ता में आई है, वहां वो जातिगत जनगणना कराने पर भी विचार कर रही है। विधानसभा चुनावों में इस मुद्दे का कोई लाभ न मिलने के बावजूद कांग्रेस कांग्रेस इसी मुद्दे को धार देने में लगी है और इसी मुद्दे पर लोकसभा चुनाव में आगे बढ़ रही है। तभी कांग्रेस सांसद राहुल गांधी लगातार जातिगत जनगणना के मुद्दे को उठा रहे हैं। और देश में सत्ता में आने पर जातिगत जनगणना कराने की भी बात कह रहे हैं।

सरकार बनने पर आरक्षण पर 50 प्रतिशत की सीमा हटाने का वादा

राहुल आरक्षण और जातिगत मुद्दे को लेकर आए दिन काफी आक्रामक रुख अपनाते जा रहे हैं। कुछ दिन पहले ही राहुल गांधी ने आरक्षण को लेकर बड़ा ऐलान करते हुए कहा था कि अगर केंद्र में 'इंडिया' गठबंधन की सरकार बनती है, तो आरक्षण पर 50 प्रतिशत की सीमा हटा देंगे और देश में जाति आधारित जनगणना होगी। राहुल गांधी ने सोशल मीडिया एक्स पर वीडियो शेयर कर लिखा था कि आरक्षण पर 50 प्रतिशत की लिमिट है और हम उसे उखाड़ कर फेंक देंगे। ये कांग्रेस और इंडिया गठबंधन की गारंटी है। राहुल कहते हैं कि मौजूदा प्रावधानों के तहत 50 प्रतिशत से अधिक आरक्षण नहीं दिया जा सकता। लेकिन इसे कांग्रेस और विपक्षी गठबंधन इंडिया की सरकार उखाड़ फेंक देगी। दलितों और आदिवासियों के आरक्षण में कोई कटौती नहीं होगी। राहुल ने दावा किया कि दलितों, आदिवासियों, अन्य पिछड़ा वर्गों (ओबीसी) को बंधुआ मजदूर बनाया गया और बड़ी कंपनियों, अस्पतालों, विद्यालयों, महाविद्यालयों और अदालतों में उनकी भागीदारी नहीं है। हमारा पहला कदम देश में जाति आधारित जनगणना कराना होगा। कांग्रेस सांसद ने आगे कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी कहते है कि वह ओबीसी हैं, लेकिन जब जातीय जनगणना की मांग की गई तो उन्होंने कहा कि यहां केवल दो जातियां हैं- अमीर और गरीब। उन्होंने दावा किया कि जब ओबीसी, दलितों, आदिवासियों को अधिकार देने का समय आया तो पीएम मोदी कहते हैं कि कोई जाति नहीं हैं और जब वोट लेने का समय आता है, तो वे कहते हैं कि वह ओबीसी हैं। यानी विधानसभा में ज्यादा सफल न हो पाने के बावजूद कांग्रेस जातिगत जनगणना और आरक्षण के मुद्दे पर ही आगे बढ़ रही है। तेलंगाना में रेवंत रेड्डी की कांग्रेस सरकार जातीय सर्वे कराने जा रही है।

बिहार में ही पड़ गई थी इस मुद्दे की नींव

जातीय जनगणना की ही तरह राहुल गांधी के नए चुनावी वादे की नींव भी बिहार में पड़ चुकी है। 2023 में ही बिहार में नौकरियों और शैक्षणिक संस्थानों में दाखिले में आरक्षण के दायरे को 60 से बढ़ाकर 75 फीसदी किए जाने के प्रस्ताव पर विधानसभा में मुहर लग चुकी है। ये बात अलग है कि सत्ता समीकरण बदल जाने के बाद, सब कुछ बदल चुका है। बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार अब इस मुद्दे पर तभी आगे बढ़ पाएंगे जब डिप्टी सीएम सम्राट चौधरी और विजय सिन्हा भी सहमत होंगे और बीजेपी नेतृत्व की मंजूरी मिलेगी। वहीं विधानसभा से आरक्षण संशोधन विधेयक 2023 के पास होने में एक खास बात ये भी देखी गई थी कि किसी ने भी विरोध नहीं किया था। यहां तक की भारतीय जनता पार्टी ने भी इसका कोई विरोध नहीं किया था। इससे पहले राहुल गांधी नीतीश कुमार को जातिगत गणना के क्रेडिट से भी बेदखल करने की कोशिश कर चुके हैं। अब ये नया कदम है, जिसमें फिर से निशाने पर नीतीश कुमार ही लगते हैं। बेशक बिहार के कास्ट सर्वे के आंकड़ों पर सवाल जरूर उठाए गए थे। लेकिन जिस तरह पिछड़े वर्ग की आबादी बड़ी होने के दावे किए जा रहे हैं। आरक्षण बढ़ाने का चुनावी दांव कारगर साबित हो सकता है। मुश्किल बस यही है कि इसे भी आखिरी वक्त में सामने लाया गया है। 2019 में कांग्रेस के मुख्य मुद्दे न्याय योजना के साथ भी ऐसा ही हुआ था और लोगों तक कांग्रेस संदेश पहुंचा ही नहीं पाई थी। लेकिन ऐसा लगता है कि इस बार राहुल पूरी ताकत के साथ आगे बढ़ रहे हैं। जातीय राजनीति के मुद्दे पर कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को भी टारगेट किया है। पीएम मोदी को निशाने पर लेते हुए राहुल गांधी कहते आए हैं कि प्रधानमंत्री इस बीच अक्सर कह रहे थे देश में सिर्फ दो जातियां हैं - अमीर और गरीब। मगर संसद में उन्होंने खुद को 'सबसे बड़ा ओबीसी' बताया। किसी को छोटा और किसी को बड़ा समझने की इस मानसिकता को बदलना जरूरी है। ओबीसी हों, दलित हों या आदिवासी, बिना गिनती के उन्हें आर्थिक और सामाजिक न्याय नहीं दिलाया जा सकता। आपको याद होगा बिहार के कास्ट सर्वे जातीय राजनीति की कोशिशों को काटने के लिए प्रधानमंत्री मोदी ने चार जातियों का जिक्र किया था। जिसमें गरीब, किसान, युवा और महिला शामिल थे। इन्हीं को लेकर राहुल गांधी भाजपा व पीएम मोदी पर हमलावर हैं और निशाना साध रहे हैं।

सही से उठाया जाए मुद्दा तो पहुंचा सकता है लाभ

फिलहाल भले राज्यों के विधानसभा चुनावों में जाति जनगणना का मुद्दा सफल न हो पाया हो। और भाजपा समर्थक जाति जनगणना के मुद्दे को हवा हवाई बता रहे हैं। लेकिन कांग्रेस व राहुल ने अपना स्टैंड क्लियर कर दिया है कि उसे जाति जनगणना के मुद्दे पर ही आगे बढ़ना है। हालांकि, यहां पर राहुल जब सत्ता में आने की बात कर रहे हैं, तो वहां पर कांग्रेस नहीं बल्कि इंडिया गठबंधन के सत्ता में आने की बात कही जा रही है। जाति जनगणना का मुद्दा वाकई ऐसा है कि अगर कांग्रेस ने इसे पूरी ताकत और एकजुटता के साथ उठा दिया तो लाख मोदी जी खुद को सबसे बड़ा ओबीसी बता लें और कर्पूरी ठाकुर को भारत रत्न देकर ओबीसी समुदाय को लुभाने का प्रयास कर लें। लेकिन अगर ये मुद्दा सही से उठा लिया गया और कांग्रेस व अन्य विपक्षी दल इसे जन-जन तक पहुंचाने में सफल हो गए तो बेशक कांग्रेस व पूरे विपक्ष को इस मुद्दे का लाभ मिलेगा और भाजपा व साहेब के लिए चुनौतियां खड़ी हो जाएंगी। ऐसे में भाजपा व साहेब से सत्ता की कुर्सी पर दूर होती जाएगी। अब बस कांग्रेस इस मुद्दे को लोकसभा चुनाव तक पूरी प्रमुखता और मुखरता से साथ उठाती रहे। वर्ना भाजपा मुद्दों से भटकाने में कितनी माहिर है ये तो कांग्रेस और राहुल गांधी समेत पूरा विपक्ष ही भली भांति जानता है। अब देखना ये ही है कि कांग्रेस इस मुद्दे को कैसे जन-जन तक पहुंचा पाती है। और इसका कितना लाभ उठा पाती है।

Sanjay Sharma

editor.sanjaysharma
@Editor_Sanjay

जिद... सच की

यूपी में राहुल को मिलेगा साथ या लौटेंगे खाली 'हाथ'!

मौसम के बढ़ते तापमान के साथ ही देश का सियासी पारा भी चढ़ता जा रहा है। क्योंकि अगले 2 से 3 महीने में देश के अंदर लोकसभा चुनाव होने हैं। देश को एक नई सरकार मिलने वाली है। लेकिन इस नई सरकार के मिलने से पहले देश का सियासी माहौल काफी गरमाया हुआ है। देश के इस गर्म सियासी माहौल में विपक्ष की हालत हर बीतते दिन के साथ पतली होती जा रही है। इसकी वजह ये है कि जो विपक्ष लोकसभा चुनाव के एक साल पहले से लेकर 5-6 महीने पहले तक एकजुट व मजबूत दिख रहा था, वो लोकसभा चुनाव के हर दिन करीब आते ही बिखरता व कमजोर होता जा रहा है। जो इंडिया गठबंधन भाजपा के विरुद्ध बना था उसके कई घटक अब गठबंधन से अलग होकर अकेले चुनाव लड़ने का ऐलान कर चुके हैं। जो कुछ अभी साथ में हैं भी तो उनमें भी अभी तक सीट बंटवारे पर सहमति नहीं बन पाई है। इस बीच अब जब राहुल गांधी की भारत जोड़ो न्याय यात्रा उत्तर प्रदेश में चल रही है तो सवाल ये ही कि क्या इस यात्रा के दौरान कांग्रेस और समाजवादी पार्टी के बीच बात बन जाएगी? क्या यात्रा में राहुल और अखिलेश एकसाथ दिखेंगे? दरअसल, अखिलेश यादव को यात्रा में सम्मिलित होने का निमंत्रण कांग्रेस की ओर से भेजा गया था जिसको स्वीकार कर सपा प्रमुख ने कहा था कि वो यात्रा में अमेठी या रायबरेली में शामिल होंगे।

अब जब यात्रा अमेठी और रायबरेली भी पहुंच चुकी है, तब अखिलेश के यात्रा में शामिल होने को लेकर सपा की ओर से ये साफ कर दिया गया कि जब तक कांग्रेस सीट बंटवारे पर सहमति नहीं बनाएगी तब तक अखिलेश यादव यात्रा का हिस्सा नहीं बनेंगे। यानी कि सपा की ओर से सही समय पर एक बड़ा दांव चला गया है। क्योंकि सपा भी जानती है कि यूपी में उसका साथ कांग्रेस के लिए काफी महत्वपूर्ण है। तो वहीं जयंत के एनडीए में जाने के बाद सपा को भी एक मजबूत साथी की जरूरत है। इसलिए अब सपा ने कांग्रेस के सामने ये अल्टीमेटम दे दिया है कि अगर उसने सीट बंटवारे पर सहमति नहीं जताई तो अखिलेश यादव भारत जोड़ो न्याय यात्रा में शामिल नहीं होंगे। मतलब कि दोनों ही दलों को एक-दूसरे की जरूरत है, ऐसे में अब कांग्रेस को ये तय करना पड़ेगा कि उसे कौनसा रास्ता चुनना है। बेशक इंडिया गठबंधन में टूट की एक सबसे बड़ी वजह ही कांग्रेस की लेट-लतीफी रही है। ऐसे में अखिलेश का ये अल्टीमेटम कांग्रेस के लिए एक अलॉर्म है कि अगर उसने एक-दो दिन में सपा के साथ सीट बंटवारे पर सहमति नहीं बनाई, तो टीएमसी, पीडीपी, नेकां और आप की तरह सपा भी इंडिया गठबंधन से अलग हो जाएगी और कांग्रेस को यूपी में भी कोई साथी नहीं मिलेगा। अब देखना ये है कि क्या यूपी से राहुल एक साथी को बढ़ाकर जाते हैं या खाली हाथ ही लौट जाएंगे।

"देश के इस गर्म सियासी माहौल में विपक्ष की हालत हर बीतते दिन के साथ पतली होती जा रही है। इसकी वजह ये है कि जो विपक्ष लोकसभा चुनाव के एक साल पहले से लेकर 5-6 महीने पहले तक एकजुट व मजबूत दिख रहा था, वो लोकसभा चुनाव के हर दिन करीब आते ही बिखरता व कमजोर होता जा रहा है।

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

मर्यादा से निभाएं माननीय अपना दायित्व

सुरेश सेठ

भारतीय इस बात पर गर्वित होते हैं कि भारत में दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है। अभी हाल ही में 17वीं लोकसभा का सत्रावसान भी हो गया। इसके बाद देश में आम चुनाव होंगे और 18वीं लोकसभा अपना पदभार संभालेगी। बेशक पहली फरवरी को वित्तमंत्री निर्मला सीतारमण ने देश का अंतरिम बजट पेश कर दिया लेकिन वहीं चौंकाने वाली घोषणाओं से परहेज किया गया। अब देश के जनमानस को जुलाई मास का इंतजार शिद्दत से रहेगा कि नई सरकार नया बजट क्या पेश करती है और इसके द्वारा भारत की विकास यात्रा कितनी द्रुत गति से हो पाती है।

वहीं देशभर में चुनावी समर तो शुरू हो ही गया है। विपक्षी कांग्रेस द्वारा भारत जोड़ो न्याय यात्रा निकाली जा रही है। वहां मोदी जी विकसित भारत संकल्प यात्रा निकाल रहे हैं। वे अपने कार्यों व उपलब्धियों का लेखा-जोखा जनता के सामने रख रहे हैं। अभी संसद के बीते सत्र में मोदी सरकार के श्वेत पत्र को विपक्ष के स्याह पत्र के साथ पंजा लड़ाते हुए भी देखा गया। जहां राजग सरकार द्वारा प्रस्तुत श्वेत पत्र को यह कहा गया था कि पिछली कांग्रेस सरकार की आर्थिक नीतियों ने जहां देश की अर्थव्यवस्था को पंगु बना दिया था, साथ ही यह भी दावा किया गया कि देश में जो तरक्की हुई वह मोदी सरकार की दो पारियों में हुई। जबकि स्याह पत्र में विपक्षी यह कहते रहे कि जो बीत गया, उसके तुलनात्मक अध्ययन में अपने पूर्वाग्रही निष्कर्षों को छोड़कर अगर सरकार देश को दरपेश महंगाई, बेकारी और बेरोजगारी की समस्या से जूझने का पत्र पेश करती तो शायद यह अधिक समीचीन होता। विपक्ष वास्तविकता को सामने लाने की बात करता रहा है। इस बात को छोड़कर अगर हम लोकसभा के इस सत्र का आकलन करें तो लोकसभा के स्पीकर ओम बिरला का कहना अतिशयोक्ति न माना जाएगा कि लोकसभा ने 97 फीसदी उत्पादकता के साथ काम किया है। लेकिन लोकसभा के लगभग सभी सत्र कोलाहल भरे और हंगामाखेज भी रहे। चिंतन, मनन और सार्थक विचारों का आदान-प्रदान तो नहीं हुआ लेकिन हर सत्र में सरकार ने अपनी बहुसंख्या के बल पर दरपेश विधेयक पास करवा लिए।

संसद के आखिरी सत्र के आखिरी दिन मोदी जी ने बहुत कुछ साफ-साफ बातें कहीं। लोकसभा के कुल कामकाज को देखते हैं तो 221 विधेयक इसमें पास हुए नजर आए हैं। निस्संदेह, ये लोकसभा

नौजवान और शिक्षित लोकसभा थी। इसकी औसत आयु 54 वर्ष थी और इसके 400 सदस्य स्नातक थे। 207 सदस्य पहली बार चुनकर आए। संसद को नया संसद भवन मिला और मिलते ही संसद की सुरक्षा में चूक हो गई। आतंकी हमले की बरसी वाले दिन ही दो लोग लोकसभा में घुस आए। इस पर खूब हंगामा हुआ। वहीं 100 से ज्यादा सांसदों का निलंबन एक ऐतिहासिक घटना थी। अब 18वीं लोकसभा गठित होगी। भारतीय लोकतंत्र के लिये शुभ इसी में है कि इसके माहौल, कामकाज और चुनकर आने वाले सदस्यों के दायित्व में बदलाव देखा जाए। अभी तक परंपरा रही है कि संसद का सत्र शुरू होने से पहले सभी पार्टियों की बैठक होती थी, जिसमें यह फैसला किया जाता कि फालतू का कोलाहल नहीं होगा। गंभीर विचार-विमर्श होगा और देश को विकास मार्ग पर चलने के लिए सही दिशा पकड़ने का सुभीता भी लोकसभा का सत्र देगा। लेकिन किसी भी सत्र में ऐसा न हो सका। कभी अडानी पर जांच की बात, कभी चीनी घुसपैठ का झंझट और कभी जातीय जनगणना को लेकर उठापटक होती रही। राम की महिमा के बारे में जो आखिरी दिन संसद के सत्र का विस्तार हुआ, वहां भी राजनीतिक उठापटक नजर आई। आजकल संसद की कार्यवाही का लाइव प्रसारण होता है। सांसदों का यह व्यवहार और लोकसभा या राज्यसभा के स्पीकर द्वारा डांट-फटकार आम जनता को बहुत शोभनीय नहीं लगती। आखिरी दिन भी राज्यसभा के सभापति जगदीप धनखड़ को भारत रत्न की घोषणाओं पर विपक्षी दलों की चीखो-पुकार के बारे में सख्त रुख अपनाना पड़ा। इसीलिए अब जब अगले आम चुनावों के बाद 18वीं लोकसभा का गठन होगा तो कुछ बातों के बारे में सत्तापक्षी और विपक्षी सांसदों को सचेत होना पड़ेगा।

पहली बात तो यह है कि देश के सामने खड़ी गंभीर समस्याओं पर गंभीर चर्चा कब होगी? नारेबाजी, विरोध, आंकड़ेबाजी और उनके मिथ्या होने के आरोप संसद की गरिमा को नहीं बढ़ाएंगे। राष्ट्रहित ही सर्वोपरि होना चाहिए। सांसद अपने-अपने दायित्व का निर्वाह करते हुए जनसमस्याओं पर चर्चा करेंगे। इसके अतिरिक्त आने वाले वर्षों के लिए भी मोदी जी ने नये सुधारों का संकल्प लिया। लोकसभा और राज्यसभा के सांसदों के व्यवहार में भी सुधार होने चाहिए। देश महत्वपूर्ण है व्यक्ति नहीं। जितनी जल्दी यह स्वीकार कर लिया जाए, उतना ही भारतीय संसद का माहौल लोकतंत्र के गौरव के अनुरूप हो जाएगा।

किसान की ससम्मान सुनवाई करने का सही अवसर

राजेश रामचंद्रन

इन दिनों किन्नुओं की बहार है और घर-द्वार पर यह 50 रुपये प्रति किलोग्राम बिक रहा है। वे पाठक, जो उपभोक्ता हैं, उनको इसमें कुछ असामान्य नहीं लगेगा। लेकिन इस बार की इसकी फसल की कहानी जद्दोजहद और आंसुओं से भीगी है। अबोहर मंडी में, जो शायद विश्वभर में किन्नू के लिए सबसे बड़ी व्यापार मंडी है, बागवान के किन्नू का भाव 3-10 रुपये प्रति किलोग्राम लग रहा है। जिस फल का दाम किसान को महज 3 रुपये प्रति किलो मिल रहा है वही चंडीगढ़ में उपभोक्ता रेहड़ी वाले से 50 रुपये में खरीद रहा है। यदि इस विद्रूपता भरी स्थिति से तीव्र आंदोलन पैदा न होगा तो फिर किससे होगा? और आज पंजाब-हरियाणा सीमा पर जो हो रहा है, वह यही है।

ऐसा क्यों? फाजिल्का जिले की अबोहर तहसील के पट्टी सादिक गांव के गुरप्रीत सिंह इस बुनियादी सवाल का जवाब पाना चाहते हैं। केंद्रीय सरकार ने उनके सफल फसल-विविधीकरण प्रयासों के लिए उन्हें राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया है। मुखर और प्रगतिशील किसान का गुरप्रीत से बेहतर अन्य उदाहरण नहीं हो सकता। उन्होंने शिक्षा में विशेषज्ञता के साथ स्नातक और स्नातकोत्तर डिग्री कर रखी है फिर भी खेती को बतौर पूर्णकालिक व्यवसाय चुना। सामान्य गेहूं-चावल के फसल चक्र से हटकर गुरप्रीत ने विविधीकरण के लिए किन्नू को चुना और 27 एकड़ पुश्तैनी जमीन के 20 एकड़ रकबे में किन्नू के बाग लगाए। लेकिन आज वे पूरी तरह मायूस हैं। ले-देकर उनके किन्नू का मंडी में भाव 10.30 रुपये प्रति किलो लगा, जो खुदरा उपभोक्ता द्वारा चुकाए जाने वाले मूल्य का महज पांचवां हिस्सा बनता है। गुरप्रीत का दावा है कि पंजाब एग्रो नामक खरीद कंपनी, जो नवम्बर-दिसम्बर में बाजार में उतरी थी, उसने उन्हें नजरअंदाज करते हुए राजनीतिक रूप से प्रभावशाली लोगों से किन्नू की 12.60 रुपये प्रति किलो के भाव से खरीद की है। हालांकि उनके इस दावे का कोई प्रमाण नहीं है। लेकिन यह तथ्य है कि इस साल फसल बढ़िया हुई है और जिन खरीददारों ने पिछले साल 27 रुपये प्रति किलो के दाम लगाकर किसानों को किन्नू उगाने के लिए प्रोत्साहित किया था, वे अचानक गायब हो गए। शायद पड़ोसी मुल्क द्वारा आयात शुल्क में बढ़ोतरी के कारण। लेकिन ये कारण उस किसान के लिए सुनने में बहाने मात्र हैं, जो बम्पर फसल देने की गलती करके, उलटा घाटे में डूबा।

यह तथ्य है कि आपूर्ति श्रृंखला के आरंभिक बिंदु पर जिस उत्पाद को 3 रुपये प्रति किलो के भाव से खरीदा जा रहा है, वह 300 किमी की दूरी पर खुदरा उपभोक्ता छोर पर 50 रुपये प्रति किलो बिक रहा है। पंजाब-हरियाणा सीमा पर जो किसान आज आंदोलनरत हैं वे भारतीय कृषि-उत्पाद बाजार में व्याप्त इस मूल विद्रूपता को ठीक करवाने के वास्ते हैं। शहरी लोग, जो पंजाब के किसानों द्वारा न्यूनतम समर्थन मूल्य को कानूनन गारंटी बनाने वाली मांग के प्रति निष्ठुर हैं और प्रदर्शनकारियों पर ड्रोन द्वारा आंसू गैस के गोले छोड़ने को सही ठहरा रहे हैं, वे किंचित ठिठककर विचार करें और सोचें कि क्या उन्हें अपने किसी उत्पाद को लागत से कम मूल्य पर बेचना गवारा होगा? तब उन्हें कैसा महसूस होगा जब पाएंगे कि उनका उत्पाद, पड़ोस के जिलों में, खरीद मूल्य से 5 से 18 गुणा महंगा - वह भी बिना कोई मूल्य-संवर्धन क्रिया से गुजरे - बिक रहा हो।

गुरप्रीत सिंह, एक प्रगतिशील किसान, जिसे अपनी जमीन, मिट्टी, भूजल स्तर की परवाह है और वह जिसे धान लगाने की एवज में पानी की भारी हानि को लेकर चिंता है, उसके पास एक सरल हल है - विपणन और अनुसंधान एवं विकास द्वारा मूल्य संवर्धन। कृषि वैज्ञानिक डॉ. एमएस स्वामीनाथन को भारत रत्न देकर सम्मानित किया जाना ऐसे वक्त में हुआ है जब गुरप्रीत को उनके ही दिए भाव-समीकरण के मुताबिक इस साल फसल पर कोई लाभ नहीं मिला। लेकिन गुरप्रीत की विपणन को लेकर चिंताओं के संदर्भ में भारत के उनसे भी बड़े रत्न यानि वर्गीज कुरियन के बारे में बात करना प्रासंगिक होगा। उन्होंने सुनिश्चित किया कि जो कुछ किसान बेचे उसे एक संगठन खरीदे, जो मुनाफा बनाए और इस लाभ का हिस्सा किसान को बेहतर खरीद प्रदान कर, उससे साझा करे। कृषि उत्पाद विपणन का अमूल से बेहतर कोई अन्य उदाहरण है? जिस प्रकार का लाभांश अमूल का उत्पादक-शेयरधारकों को मिलता है, वैसा पाने का हकदार भारत का प्रत्येक किसान है। जब तक किसान को उसके द्वार पर उत्पाद का मूल्य- लाभ सहित- न मिल पाएगा तब तक भारतीय कृषक सरकार के समक्ष दखल देने और कानूनन गारंटी देने की मांग करने को मजबूर रहेगा।

खाद्य तेल का भारत सबसे बड़ा खरीदार है और इसके लिए 20 बिलियन डॉलर मूल्य का आयात सालाना करना पड़ता है, तथापि, सूरजमुखी बीज के उत्पादक किसानों को पिछली फसल में यथेष्ट भाव पाने के लिए हरियाणा के कुरुक्षेत्र के पास शाहबाद में नेशनल हाइवे को जाम करके प्रदर्शन करना पड़ा - जिस न्यूनतम सरकारी समर्थन मूल्य 6400 रुपये प्रति क्विंटल पर इसकी कथित खरीद की गई, यह महत्वपूर्ण उत्पाद सरकार द्वारा खरीदना अपेक्षित है जो उपभोक्ता की जेब पर असर डालता है। लेकिन पिछले साल किसान को अपनी सरसों की फसल भी आढ़ती को 4,440 रुपये प्रति क्विंटल बेचनी पड़ी। जबकि न्यूनतम समर्थन मूल्य 5,450 रुपये प्रति क्विंटल तय हुआ था। हर साल, ऐसे दृश्य देखने को मिलते हैं जब कुछ किसान सड़कों पर सब्जियां या फल फेंक देते हैं या फिर खेतों में ट्रैक्टर से कुचलना पड़ता है, इससे सरकार की आंख खुल जानी चाहिए थी।

जंक फूड

इन दिनों जंक फूड का चलन काफी बढ़ गया है। भले ही जंक फूड खाने में स्वादिष्ट हो लेकिन इसके फायदे कम नुकसान ज्यादा हैं। इसकी एक वजह हमारी भागदौड़ भरी जीवनशैली है, जिसके कारण हमारे पास टाइम की कमी होने की वजह से हम ऐसे खाने की तरफ बढ़ते हैं जो मिलने में आसान और बनने में आसान हो। तभी इस तरह के फूड को फास्ट फूड भी कहा जाता है। जंक फूड खाने से त्वचा बाल और नाखून भी प्रभावित होते हैं। शरीर पर एग्जिमा, खुजली, स्कैल्प की समस्याएं देखने को मिल सकती हैं। जंक फूड से बालों को होने वाले नुकसान की प्रक्रिया बहुत जटिल है। आप आसान भाषा में बस इतना समझ लीजिए कि ज्यादा जंक फूड खाने से शरीर के हॉर्मोन्स का संतुलन गड़बड़ा जाता है। जंक फूड ऑयली और प्रोसेस्ड फूड होता है, जो सेहत को कई तरह से प्रभावित करता है।

शक्कर

जरूरत से ज्यादा शक्कर सेहत के साथ-साथ बालों के लिए भी नुकसानदायी है। कुछ स्टडीज में ये साबित हुआ है कि डायबिटीज और ओबेसिटी का कारण बनने वाली शक्कर हेयर फॉल का कारण भी होती है। हाई शुगर वाली डाइट, स्टार्च और रिफाइंड कार्बोहाइड्रेट्स की वजह से बालों का झड़ना बढ़ सकता है। अगर हम चीनी नहीं खाते हैं तो ये शरीर को कोई नुकसान नहीं पहुंचाएगा, बल्कि ऐसा करने से ढेरों फायदे ही होंगे। आपका वेट लॉस हो सकता है, क्योंकि चीनी में कैलोरी की मात्रा अधिक होती है। कई तरह की बीमारियों से आपका शरीर बचा रह सकता है जैसे डायबिटीज, मोटापा आदि। शरीर के अंदर होने वाली सूजन या इंफ्लेमेशन से बचे रह सकते हैं। चीनी ना खाने या कम खाने की आदत से आपके दांत हेल्दी बने रहते हैं। यदि किसी को शुगर है, हार्ट डिजीज है तो चीनी का सेवन कम ही करना चाहिए।

स्वस्थ बाल

के लिए इन चीजों से बनाएं दूरी

बाल अगर तेजी से झड़ रहे हैं तो उनका इलाज सिर्फ उन प्रोडक्ट्स में नहीं हो जो आप बालों के लिए इस्तेमाल करते हैं। कुछ चीजें ऐसी होती हैं जिन्हें अपनी खुराक से घटा कर आप बालों का झड़ना रोक सकते हैं।

डाइट सोडा

कोल्ड ड्रिंक में कैलोरी अधिक है, अगर यह सोचकर आप धड़ल्ले से डाइट ड्रिंक्स का सेवन करते हैं तो जान लें कि इनके भी साइड एफेक्ट्स कम नहीं हैं। अधिकांश डाइट सोडा में अस्पार्टेम नाम का आर्टिफिशल स्वीटनर होता है। शक्कर की तरह ये भी बालों के फॉलिकल्स को नुकसान पहुंचाता है। जिसकी वजह से बाल कमजोर होकर झड़ने लगते हैं।

बाल अगर तेजी से झड़ रहे हैं तो उनका इलाज सिर्फ उन प्रोडक्ट्स में नहीं हो जो आप बालों के लिए इस्तेमाल करते हैं। कुछ चीजें ऐसी होती हैं जिन्हें अपनी खुराक से घटा कर आप बालों का झड़ना रोक सकते हैं। झड़ते बाल हों या डल होती स्किन, दोनों के घरेलू उपचार में डाइट में अलग-अलग चीजें शामिल करने की सलाह दी जाती है। ताकि, बाल झड़ना बंद हो जाएं या स्किन फिर से ग्लो करने लगे। ऐसे में अगर हम आपसे कहें कि बाल झड़ने से रोकने के लिए कुछ खाना शुरू करने की जगह कुछ चीजें अपनी डाइट से बिलकुल कम कर दें या खत्म ही कर दें तो ज्यादा बेहतर होगा। तो, क्या आप यकीन कर सकेंगे? शायद नहीं। यकीन करने के लिए आजमा कर देखना ज्यादा सही तरीका है। इन्हें खाने की थाली से बाहर कर आप हेयर फॉल की परेशानी से निजात पा सकते हैं। एक बार इन चीजों को खाना बंद कीजिए और खुद ही बालों पर असर देखिए।

हाई ग्लाइसेमिक इंडेक्स वाले खाने

हाई ग्लाइसेमिक इंडेक्स वाले खाने को पचाने के लिए इंसुलिन ज्यादा मात्रा में रिलीज होता है। जिसकी वजह से शरीर में इंसुलिन का असंतुलन हो जाता है। इंसुलिन के साथ मिलकर एंड्रोजन नाम का तत्व बालों को स्कैल्प से बाइंड रखता है और हेयर फॉलिकल्स को मजबूत बनाता है। इंसुलिन के असंतुलन से बालों की बाइंडिंग कमजोर होने लगती है और हेयर फॉल बढ़ जाता है।

अल्कोहल

बालों में एक प्रोटीन होता है केराटिन प्रोटीन, जिसकी वजह से बालों का स्ट्रक्चर सही रहता है। अल्कोहल लेने का असर प्रोटीन के बनने पर पड़ता है। जिसमें केराटिन भी शामिल है। ज्यादा अल्कोहल से केराटिन प्रोटीन बनने की मात्रा भी कम हो जाती है और बाल कमजोर होने लगते हैं।

हंसना मना है

पति: अल्लाह ने तुम्हें 2 आंखे दी हैं, चावल से पत्थर नही निकाल सकती? पत्नी: अल्लाह ने तुम्हे 32 दांत दिए है, 2-4 पत्थर नहीं चबा सकते?

अर्ज है: रोज रोज वजन नापकर क्या करना है, एक दिन तो सबने मरना है, चार दिन की है जिंदगी, खा लो जी भर के, अगला जन्म फिर 3 किलो से शुरू करना है!

वाइफ: प्लीज बाइक तेज ना चलाओ, मुझे डर लग रहा है। सरदार: अगर तुझे भी डर लग रहा है, तो मेरी तरह आंखें बंद कर ले।

पत्नी: डॉक्टर साहब.. मेरे पती को रात मे बडबडाने की आदत है, कोई उपाय बताये? डॉक्टर: आप उन्हें दिन में बोलने का मौका दिया करें..

पापा बेटी से: बेटी पहले तो तुम मुझे पापा कहती थी, लेकिन अब तुम मुझे डैड कहती हो, क्यों? बेटी: ओह डैड, पापा कहने से लिपस्टिक खराब होती है।

संता बार में रो रहा था। बंता: क्यों रो रहे हो? संता: और क्या करूं? जिस लड़की को भुलाना चाहता हूं, उसका नाम ही याद नही आता।

कहानी | बुद्धिमान बंदर और मगरमच्छ

एक था घना जंगल, जहां जानवर एक दूसरे के साथ बहुत प्यार से रहा करते थे। उस जंगल के बीच एक बहुत सुंदर और बड़ा तालाब था। उस तालाब में एक मगरमच्छ रहता था। तालाब के चारों ओर बहुत सारे फलों के पेड़ लगे हुए थे। उनमें से एक पेड़ पर बंदर रहता था। बंदर और मगरमच्छ एक दूसरे के बहुत अच्छे दोस्त थे। बंदर पेड़ से मीठे और स्वादिष्ट फल खाता था और साथ ही अपने दोस्त मगर को भी देता था। बंदर अपने दोस्त मगर का खास ख्याल रखता और मगर भी उसे अपनी पीठ पर बैठाकर पूरे तालाब में घुमाता था। दिन निकलते गए और दोनों की दोस्ती गहरी होती गई। बंदर जो फल मगरमच्छ को देता था, मगरमच्छ उनमें से कुछ फल अपनी पत्नी को भी खिलाता था। दोनों फलों को बड़े ही चाव से खाते थे। बहुत दिनों के बाद एक बार मगर की पत्नी ने कहा कि बंदर तो हमेशा ही स्वादिष्ट फल खाता रहता है। जरा सोचो उसका कलेजा कितना स्वादिष्ट होगा। वह मगर से जिद करने लगी कि उसे बंदर का कलेजा खाना है। मगर ने उसे समझाने की कोशिश की, लेकिन वह नहीं मानी और वो मगर से रूठ गई। अब मगर को न चाहते हुए भी हां बोलना पड़ा। उसने कहा कि वो दूसरे दिन बंदर को अपनी गुफा में लेकर आ जाएगा, तब उसका कलेजा निकालकर खा लेना। इसके बाद मगर की पत्नी मान गई। हर दिन की तरह स्वादिष्ट फलों के साथ बंदर मगर का इंतजार करने लगा। कुछ ही देर में मगर भी आ गया और दोनों ने मिलकर फल खाए। मगरमच्छ बोला कि दोस्त आज तुम्हारी भाभी तुमसे मिलना चाहती है। चलो तालाब की दूसरी ओर मेरा घर है, आज वहां चलते हैं। बंदर झट से मान गया और उछलकर मगर की पीठ पर बैठ गया। मगर उसे लेकर अपनी गुफा की ओर बढ़ने लगा। जैसे ही दोनों तालाब के बीच पहुंचे, मगर ने कहा कि मित्र आज तुम्हारी भाभी की इच्छा है कि वो तुम्हारा कलेजा खाये। ऐसा कहकर उसने पूरी बात बताई। बात सुनकर बंदर कुछ सोचने लगा और बोला मित्र तुमने मुझे यह पहले क्यों नहीं बताया। मगर ने पूछा क्यों मित्र क्या हो गया। बंदर बोला कि मैं अपना कलेजा तो पेड़ पर ही छोड़ आ हूं। तुम मुझे वापस ले चलो तो मैं अपना कलेजा साथ में ले आऊंगा। मगर बंदर की बातों में आ गया और वापस किनारे पर आ गया। वो दोनों जैसे ही किनारे पर पहुंचे बंदर झट से पेड़ पर चढ़ गया और बोला कि मूर्ख तुझे पता नहीं कि कलेजा हमारे अंदर ही होता है। मैं हमेशा ही तुम्हारा भला सोचता रहा और तुम मुझे ही खाने चले थे। कैसी मित्रता है यह तुम्हारी। चले जाओ यहां से। मगर अपनी करनी पर बहुत शर्मिंदा हुआ और उसने बंदर से माफी मांगी, लेकिन अब बंदर उसकी बातों में नहीं आने वाला था।

7 अंतर खोजें

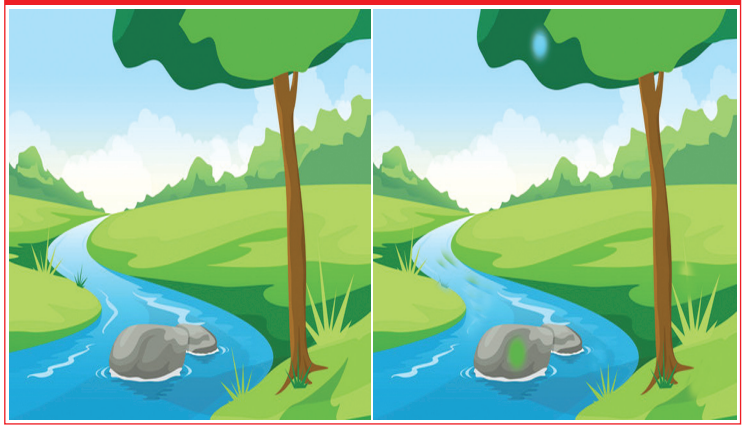

जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

मेष

रचनात्मक कार्य सफल रहेंगे। कार्य की प्रशंसा होगी। प्रसन्नता तथा संतुष्टि रहेगी। यात्रा मनोरंजक हो सकती है। व्यापार-व्यवसाय में नए प्रयोग किए जा सकते हैं।

वृषभ

व्यापार-व्यवसाय में धीमापन रह सकता है। आय में निश्चितता रहेगी। समय शीघ्र सुधरेगा। विवाद को बढ़ावा न दें। बेवजह कहासुनी हो सकती है।

मिथुन

मित्रों का सहयोग करने का अवसर प्राप्त हो सकता है। सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। व्यापार-व्यवसाय मनोनुकूल चलेगा। शेयर मार्केट व म्युचुअल फंड से लाभ होगा।

कर्क

आत्मसम्मान बना रहेगा। उत्साहवर्धक सूचना प्राप्त होगी। भूले-बिसरे साथियों व संबंधियों से मुलाकात होगी। कारोबार में अनुकूलता रहेगी। स्वास्थ्य कमजोर रह सकता है।

सिंह

बेरोजगारी दूर करने के प्रयास सफल रहेंगे। नवीन वस्त्राभूषण की प्राप्ति हो सकती है। नौकरी में प्रभाव बढ़ेगा। यात्रा लाभदायक रहेगी। स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें।

कन्या

स्वास्थ्य का पाया कमजोर रहेगा। जोखिम व जमानत के कार्य टालें। कोई भी महत्वपूर्ण निर्णय लेने में जल्दबाजी न करें। फालतू खर्च होगा। कर्ज लेना पड़ सकता है।

तुला

यात्रा मनोनुकूल रहेगी। नया काम मिलेगा। नए अनुबंध होंगे। डूबी हुई रकम प्राप्त हो सकती है। कारोबार में वृद्धि होगी। नौकरी में प्रभाव बढ़ेगा। जल्दबाजी न करें।

वृश्चिक

कार्यस्थल पर सुधार व परिवर्तन हो सकता है। योजना फलीभूत होगी। तत्काल लाभ नहीं होगा। निवेश में जल्दबाजी न करें। आय के नए स्रोत प्राप्त हो सकते हैं।

धनु

सत्संग का लाभ प्राप्त होगा। राजकीय बाधा दूर होकर स्थिति लाभदायक बनेगी। कारोबार में वृद्धि होगी। आसपास का वातावरण सुखद रहेगा।

मकर

स्वास्थ्य का पाया कमजोर रहेगा। क्रोध व उतेजना पर नियंत्रण रखें। चोट व दुर्घटना से बड़ी हानि की आशंका बनती है, सावधानी आवश्यक है।

कुम्भ

कोर्ट व कचहरी के कार्य अनुकूल रहेंगे। व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी। लाभ के अवसर हाथ आएंगे। कारोबार लाभदायक रहेगा। नौकरी में प्रभाव बढ़ेगा।

मीन

भूमि-भवन व मकान-दुकान इत्यादि की खरीद-फरोख्त मनोनुकूल लाभ देगी। बेरोजगारी दूर होगी। आय के नए स्रोत प्राप्त हो सकते हैं। भाग्य का साथ मिलेगा।

बॉलीवुड | मन की बात

आज तो हर कोई यूट्यूब चैनल का रिपोर्टर बन बैठा है : सोनाली

मराठी और हिंदी फिल्म इंडस्ट्री में सोनाली कुलकर्णी नाम की दो अभिनेत्रियां हैं। अक्सर इनके नाम को लेकर सिर्फ दर्शकों को ही नहीं बल्कि पत्रकारों को भी भ्रम होता रहता है। नटरंग जैसी मराठी फिल्म से चर्चित हुई अभिनेत्री सोनाली कुलकर्णी को लोगों ने नाम बदलने की भी सलाह दी, लेकिन सोनाली ने अपना नाम नहीं बदला। सोनाली कुलकर्णी ने हिंदी में ग्रैंड मस्ती और सिंघम रिटर्न्स जैसी फिल्में की हैं। हाल ही में उनकी पहली मलयालम फिल्म मलाईकोट्टई वालिबन रिलीज हुई, जिसमें उन्होंने सुपरस्टार मोहनलाल के साथ काम किया। अपने अभिनय को मिल रहे विस्तार से सोनाली काफी खुश हैं, उनकी इस खुशी में अमर उजाला भी शामिल हुआ। मेरी मराठी फिल्म नटरंग के गाने अप्सरा आली की वजह से ही मुझे ये मौका मिला। निर्देशक लिजो जोस पेलिसेरी ने मेरा वह गाना देखा था। इस फिल्म में मेरी भूमिका एक डांसर रंगपट्टिनम रंगरानी की है। लिजो जोस पेलिसेरी ने अपनी कास्टिंग टीम को मुझसे संपर्क करने को कहा था। मेरे पास फोन आए तो मुझे लगा कि ऐसे ही कोई मजाक कर रहा है। मलयालम फिल्म इंडस्ट्री से मेरे एक दोस्त सिद्धार्थ मालिक हैं। वह मेरे साथ मराठी फिल्म पोस्टर बॉय में काम कर चुके हैं। उन्होंने बताया कि लोग तुम्हें ढूंढ रहे हैं, फोन आएगा तो मना मत करना। मराठी फिल्म ताराराणी की शूटिंग की लोकेशन पर ये लोग मुझे मिलने ही पहुंच गए। मैंने उनकी मलयालम फिल्में दृश्यम और दृश्यम 2 देखी हैं। इसके अलावा उनकी कोई भी मलयालम फिल्म नहीं देखी थी। फिल्म मलाईकोट्टई वालिबन में वह 60 साल की उम्र में अपने सारे एक्शन सीन खुद कर रहे थे। वह प्रशिक्षित नर्तक और मार्शल आर्ट्स जानकार हैं। इस फिल्म की पूरी शूटिंग राजस्थान में हुई है। मलयालम सिनेमा की अब तक की सबसे महंगी फिल्म है। इस फिल्म में मेरा किरदार गांव गांव जाकर नृत्य करता है और मोहनलाल का किरदार गांव -गांव में पहलवानी। इसी यात्रा में हमारी मुलाकात होती है। मोहनलाल सर बहुत बड़े स्टार हैं, लेकिन वह कभी जाहिर नहीं करते हैं कि इतने बड़े स्टार हैं। मैंने छह महीने से अपने इस सीन और इसके संवादों की तैयारी करके रखी थी।

आरसी 16 में राम चरण के साथ नजर आएंगी जान्हवी

जान्हवी कपूर इन दिनों अपने तेलुगु डेब्यू को लेकर सुर्खियों में बनी हुई हैं। एक तरफ जहां अभिनेत्री जूनियर एनटीआर के साथ देवरा में मुख्य भूमिका में नजर आने वाली हैं। वहीं, दूसरी ओर खबर थी कि वे राम चरण के साथ आरसी 16 में भी अभिनय करेंगी। इस बीच, अब फिल्म निर्माता बोनी कपूर ने सभी अटकलों पर विराम लगाते हुए पुष्टि की है कि जान्हवी ने अपना दूसरा तेलुगु प्रोजेक्ट साइन किया है। वे जल्द ही बुची बाबू सना के साथ अपने आगामी प्रोजेक्ट में राम चरण के साथ स्क्रीन साझा करेंगी। बोनी ने कहा, मेरी बेटी पहले ही जूनियर एनटीआर के साथ एक फिल्म की शूटिंग कर चुकी है। वे जल्द ही वह राम चरण के साथ भी एक फिल्म शुरू करेंगी। रामचरण और जूनियर एनटीआर दोनों लड़के बहुत अच्छे हैं। जान्हवी बहुत सारी तेलुगु फिल्में देख रही हैं और उनके साथ काम करके वे धन्य महसूस करती हैं। मुझे उम्मीद है कि जान्हवी की फिल्म देवरा दर्शकों को पसंद आएगी। जान्हवी जल्द ही सूर्या के साथ भी स्क्रीन साझा करेंगी। उन्होंने अपनी पत्नी श्रीदेवी को याद करते हुए कहा, श्रीदेवी ने भी कई भाषाओं में अभिनय किया, मुझे उम्मीद है कि मेरी बेटी भी ऐसा ही करेगी। जान्हवी कपूर फिलहाल जूनियर एनटीआर के साथ फिल्म देवरा में काम कर रही हैं। इस फिल्म से अभिनेत्री अपना तेलुगु डेब्यू करने जा रही हैं। इस फिल्म का निर्देशन कोराताला शिवा ने किया है। प्रकाश राज, श्रीकांत, शाइन टॉम चाको, नारायण, कलैयारासन, मुरली शर्मा और अभिमन्यु सिंह सहायक कलाकारों का हिस्सा हैं। वहीं, आरसी16 में उनकी भूमिका उन्हें तेलुगु सिनेमा में अपने अभिनय कौशल को प्रदर्शित करने का एक और शानदार मौका मिल गया है। इस खबर के सामने आने के बाद से ही जान्हवी के फैंस उत्साहित हो गए हैं। रामचरण की फिल्म आरसी 16 की बात करें, तो इसका निर्देशन बुच्ची बाबू सना के जरिए किया जाएगा। आरसी 16 में रामचरण के अलावा जान्हवी कपूर और शिव राजकुमार मुख्य भूमिका में नजर आएंगे।

बॉलीवुड | मसाला

बेटी को नहीं पसंद मां रवीना का रील्स बनाना

बॉलीवुड अभिनेत्री रवीना टंडन हाल ही में, वेब सीरीज कर्मा कॉलिंग में नजर आईं। इस सीरीज को दर्शकों ने खूब सराहना मिली। रवीना अपनी पर्सनल और प्रोफेशनल लाइफ दोनों के जरिए सुर्खियां बटोरती हैं। अभिनेत्री की बेटी राशा, अजय देवगन और उनके भतीजे अमन देवगन के साथ एक अनटाइटल्ड फिल्म से बॉलीवुड में डेब्यू करने के लिए पूरी तरह तैयार हैं। रवीना ने हाल में, बातचीत के दौरान खुलासा किया कि राशा को उनका रील्स बनाना पसंद नहीं है। रवीना ने बताया कि इंस्टाग्राम पर उनका रील्स बनाना राशा को पसंद नहीं है। इसके लिए राशा अक्सर रवीना को डांटती हैं। अभिनेत्री ने कहा, जब इंस्टाग्राम की बात आती है, तो मैं बहुत बेकार हूं और मुझे इसके बारे में कुछ भी नहीं पता है। मैं रील्स बनाते हुए सच में बहुत गलतियां करती हूं। जब मेरी टीम मुझसे रील पोस्ट करने के लिए कहती है, तो मैं कोई मजेदार रील बनाने के लिए चुनती हूं, क्योंकि मुझे ऐसी ही रील्स पसंद आती हैं। अभिनेत्री ने आगे कहा, मैं बिना यह सोचे कि मैं एक कलाकार हूं, इस तरह की रील्स बनाती हूं। तब राशा मुझसे कहती हैं, मम्मा, आप ये रील्स नहीं बना सकतीं, ये अच्छी नहीं हैं। हालांकि, मुझे रील्स बहुत पसंद आती हैं। रवीना ने आगे बताया कि कुछ महीने पहले जब वाह ट्रेंड चला, तो मैंने भी इस पर रील बनाई थी। राशा को यह पसंद नहीं आई और उन्होंने मुझे इंस्टाग्राम से हटाने के लिए कहा। हालांकि, तभी इस ट्रेंड पर दीपिका ने रील बनाई। तभी मैंने राशा को भेजा और कहा, देखो, हर कोई इसे बना रहा है, सिर्फ इसलिए कि दीपिका ने इसे बनाया। रवीना हाल ही में, वेब सीरीज कर्मा कॉलिंग में नजर आईं, जिसमें उन्होंने इंद्राणी कोठारी का किरदार निभाया है। रवीना के आलावा इसमें वरुण सूद और नम्रता शेठ भी हैं। यह सीरीज 26 जनवरी 2024 को डिज्नी प्लस हॉटस्टार पर स्ट्रीम हुई। ये सीरीज यूएस की ऑरिजिनल सीरीज रिवेंज पर आधारित है। कर्मा कॉलिंग का निर्देशन रुचि नारायण के जरिए किया गया है। वहीं, उनके अपकमिंग प्रोजेक्ट की बात करे तो, रवीना वेलकम के तीसरे भाग वेलकम टू द जंगल में लंबे समय बाद अक्षय कुमार के साथ नजर आएंगी। इस फिल्म दिशा पटानी, अरशद वारसी, श्रेयस तलपड़े और संजय दत्त जैसी कई बड़े अभिनेता महत्वपूर्ण भूमिका में होंगे।

बोलीं- बेटी से सुनने को मिलती है डांट

अजब-गजब | कड़ाही में ढक कर पका रही थी खतरनाक चीज

ढक्कन उठाते ही कांप गया कलेजा!

दुनिया का वो कौन सा देश है, जहां के लोग सबसे अजीबोगरीब खान-पान के शौकीन हैं? अगर आपसे ये सवाल पूछे तो निश्चित रुप से आपका जवाब चीन होगा। ऐसा इसलिए क्योंकि यहां के लोग कुत्ते-बिल्ली तो छोड़िए, झिंगूर, बिच्छू, बाघ और शेर जैसे जानवरों को भी मारकर खा जाते हैं। लेकिन इस मामले में इंडोनेशिया के लोग भी पीछे नहीं हैं। यहां के लोग भी सांप से लेकर कई अन्य खतरनाक जीवों को खा जाते हैं। सोशल मीडिया पर एक ऐसा ही वीडियो वायरल हो रहा है। यकीन मानिए, उसे देखकर आपका भी कलेजा कांप उठेगा। वीडियो में देखा जा सकता है कि एक महिला बड़ी सी कड़ाही को आग पर बैठाकर उसे ढंक कर रखी हुई है। इसमें वो उस खतरनाक 'चीज' को पका रही है, जिसे शायद ही आप कभी खाने के बारे में सोच सकते हैं। दरअसल, महिला कड़ाही में मगरमच्छ को पका रही है। इसका खुलासा तब होता है, जब वो कड़ाही के ढक्कन को हटाती है। देखा जा सकता है कि उसमें पहले से हल्दी, लहसून जैसी चीजें पड़ी हुई हैं। इसके बाद महिला उसमें शिमला मिर्च, फिर मूली डालती है। इतना ही नहीं, इसे स्वादिष्ट बनाने के लिए उसमें गाजर, प्याज, पत्ता गोभी, टिंडे और अन्य साग-सब्जियां डालती है। पक जाने के बाद कड़ाही से वो मगरमच्छ को बाहर निकालती है, इसके बाद जो होता है, उसे देख आप भी थर-थरा जाएंगे। दरअसल, महिला मगरमच्छ के पेट को चीर देती है, जिसमें से पहले से उसने अंडे, मूली जैसी चीजें घुसेड़ रखी थी। उन्हें बाहर निकालती है। उसके पेट में अदरक से लेकर प्याज की पत्ती और पनीर जैसी चीजें भी पकाई गईं। इसके बाद लोगों को मिक्स करके उसे परोस दिया जाता है। अगर आपने ये वीडियो देख लिया तो इंडोनेशिया में जाकर साग-सब्जियां और पनीर खाना भी छोड़ देंगे। इंस्टाग्राम पर इस वीडियो को कुलिंगर मलांक टर-अपडेट ने अपलोड किया है, जो तेजी से वायरल हो रहा है। इसे अब तक लाखों व्यूज मिल चुके हैं, वहीं 15 हजार से भी ज्यादा लोगों ने लाइक किया है, जबकि 23 सौ से ज्यादा लोगों ने कमेंट किए हैं। वीडियो के कैप्शन में लिखा है कि आपने अब तक का सबसे एक्स्ट्रीम खाना कौन-सा खाया है। इस पर एक यूजर ने पूछा है कि क्या ये हलाल है? तो एक अन्य ने लिखा है कि ये तो कूड़ा लग रहा है। इस वीडियो को फूड ओ'क्लॉक टीवी पर दिखाया गया था। इनके अलावा भी कई लोगों ने कमेंट्स किए हैं। एक यूजर ने लिखा है कि यहूदियों के धार्मिक ग्रंथ तोरा के मुताबिक, हमें जानवरों को इस तरह से खाने के लिए नहीं कहा गया है। इससे बिमारियां फैलती हैं। वहीं, एड्रियाना नाम की महिला ने लिखा है कि निश्चित रुप से इसे मैं टेस्ट करना चाहूंगी। निया सुलेमान ने अपने कमेंट में लिखा है कि मैंने सुना है कि मगरमच्छ हलाल होते हैं। लेकिन इसे हलाल खाने की भी हिम्मत नहीं है। हालांकि, एक यूजर ने इस मीट की बुराई की है। उसने लिखा है कि मैं मगरमच्छ का मांस खा चुका हूं, यह अच्छा नहीं है, इससे बहुत ज्यादा दुर्गंध आती है।

मरने की कगार पर था बंदर, घर ले आई महिला, अब बन चुका है इंसान!

दुनिया में अलग-अलग किस्म के लोग होते हैं। कुछ लोगों को पौधों से ज्यादा लगाव होता है, तो कुछ लोग ऐसे भी होते हैं, जिन्हें जानवरों से लगाव रहता है। आपने अक्सर ऐसे लोगों को घर में कुत्ते-बिल्लियां और पक्षी पाले हुए देखा होगा। हालांकि किसी के घर में बंदर पला हुआ शायद ही आपने कभी देखा हो। आपने लोगों को घर में कुत्ते-बिल्ली को पालते हुए देखा होगा। हालांकि दुनिया में सबसे होशियार जानवरों में से एक अगर बंदर को कोई पाले, तो वो बिल्कुल इंसानों की तरह ही रहते हैं। आप इस वीडियो में खुद ही देख लीजिए। महिला ने एक बेसहारा बंदर को पनाह दी और उसे बच्चे की तरह पालने लगी। फिर बंदर ने जो वफादारी दिखाई, उसे देखकर आप मुस्कुरा देंगे। वायरल हो रहे वीडियो में आप देख सकते हैं कि महिला को एक बंदर रास्ते में बहुत ही बुरी स्थिति में मिलता है। वो उसे वहां से उठाकर अपने घर ले आती है। बंदर को नहलाती है, साफ करती है और बच्चों की तरह उसका ख्याल रखती है। धीरे-धीरे बंदर भी उसके साथ इंसानों की तरह रहना सीख जाता है और सफाई से लेकर खाना बनाने जैसे काम तक में उसकी मदद करता है। बाज़ार से सब्ज़ियां लेने और मोबाइल देखने में भी वो बिल्कुल परफेक्ट हो जाता है। उसकी हरकतें कहीं से भी बंदरों वाली नहीं लगती हैं। वीडियो को सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म इंस्टाग्राम पर अकाउंट से शेयर किया गया है। वीडियो को अब तक 38 लाख से ज्यादा लोग देख चुके हैं, जबकि 4 लाख से ज्यादा लोगों ने इसे पसंद किया है। वीडियो पर कमेंट करते हुए लोगों ने महिला की तारीफ की है और कहा है कि उसने बंदर को बिल्कुल इंसान बना दिया। एक यूज़र ने कहा कि इसे बचाकर उन्होंने बड़े ही पुण्य का काम किया है।

एनआरसी लाने से पहले पश्चिम बंगाल में निष्क्रिय किए गए आधार कार्ड : ममता

» सीएम का बड़ा आरोप पीएम को लिखा पत्र

» बोलीं- हम किसी गरीब के साथ गलत नहीं होने देंगे

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

कोलकाता। लोकसभा चुनावों को ध्यान में रखते हुए देश की सियासत गरमाई हुई है। इस बीच पश्चिम बंगाल में आधार कार्ड को निष्क्रिय किए जाने के दावों पर आरोप-प्रत्यारोप का दौर जारी है। अब मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने आरोप लगाया है कि एनआरसी लाने से पहले पश्चिम बंगाल में आधार कार्ड निष्क्रिय कर दिए गए। अधिकतर मतुआ समुदाय के लोगों के आधार कार्ड निष्क्रिय कर दिए गए हैं। उन्होंने यह भी कहा कि लोकसभा चुनाव से पहले पश्चिम बंगाल के लोगों के आधार कार्ड निष्क्रिय किए जाने के बारे में प्रधानमंत्री को पत्र लिखेंगी।

सीएम ममता ने कहा कि जिन लोगों के नाम काटे जा रहे हैं, उन्हें हम एक अलग कार्ड देंगे। हम किसी भी गरीब के साथ गलत नहीं होने देंगे। हमने पश्चिम बंगाल सरकार का आधार शिकायत पोर्टल नाम से एक पोर्टल तैयार किया है। जिनका आधार कार्ड काटा गया है, ऐसे लोगों को यथाशीघ्र हमें सूचित करना चाहिए ताकि वे अपने लोकतांत्रिक, सामाजिक और आर्थिक अधिकारों का लाभ लेते रहें।

हर नागरिक बंगाल सरकार की योजनाओं का उठा सकता है लाभ

इस बीच ममता बनर्जी ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को पत्र लिखा। उन्होंने कहा कि मैं पश्चिम बंगाल में विशेष रूप से एससी, एसटी और ओबीसी समुदायों को निशाना बनाकर आधार कार्डों को लापरवाही से निष्क्रिय करने की कड़ी निंदा करती हूं। हम सभी भारत के नागरिक हैं। प्रत्येक नागरिक पश्चिम बंगाल सरकार की कल्याणकारी योजनाओं का लाभ उठा सकता है, भले ही उनके पास आधार कार्ड हों या नहीं।

ऑफिशियल गलती के कारण आधार कार्ड हुए निष्क्रिय : बीजेपी

इससे पहले बंगाल भाजपा अध्यक्ष डॉ. सुकांत मजूमदार ने कहा कि आधार कार्ड के निष्क्रिय होने को लेकर जो कुछ समस्या देखी जा रही थी। इसके संबंध में मैंने केंद्रीय आईटी मंत्री अश्विनी वैष्णव के साथ आज मुलाकात की। उन्होंने कहा कि निष्क्रियता ऑफिशियल गलती के कारण हुई थी। इस कारण बंगाल में करीब 54 हजार लोगों के आधार कार्ड निष्क्रिय हो गए थे। आज शाम तक सभी आधार कार्ड फिर से जुड़ जाएंगे। मजूमदार ने इस मुद्दे पर राजनीतिक करने के लिए बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी पर सुकांत ने हमला बोला। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री संदेशखाली से लोगों का ध्यान भटकाने के लिए इसे मुद्दा बना रही हैं। मुख्यमंत्री विभिन्न जिलों में लोगों को डरा रही हैं कि आधार कार्ड को खत्म किया जा रहा है। एनआरसी लागू हो रही है, जबकि ऐसा कुछ भी नहीं है। यह एक टेक्नीकल गलती के कारण हुआ है।

गोवा में दोहरी नागरिकता के मुद्दे का शीघ्र हो समाधान : खुर्शीद

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

पणजी। पूर्व विदेश मंत्री सलमान खुर्शीद ने कहा कि गोवा में दोहरी नागरिकता के मुद्दे का अब तक समाधान हो जाना चाहिए था। यह लोगों के लिए एक बड़ी चिंता का विषय है। दोहरी नागरिकता कभी पुर्तगाल का उपनिवेश रहे गोवा में एक संवेदनशील मुद्दा है।

खुर्शीद द्वारा इसे उठाया जाना यह संकेत देता है कि कांग्रेस आगामी लोकसभा चुनावों में यह मुद्दा उठा सकती है। कांग्रेस के स्थानीय नेताओं के साथ बैठक करने के बाद खुर्शीद ने कहा कि लोगों को सोच-विचार कर अपना वोट देना चाहिए, क्योंकि आने वाली पीढ़ियों का भविष्य चुनावों में दिये गए वोट से तय होगी। उन्होंने कहा कि मैं हैरान हूं कि दोहरी नागरिकता और ओसीआइ (प्रवासी भारतीय नागरिक) कार्ड का मुद्दा अब तक सुलझा नहीं है। गोवा में अधिकांश लोगों ने संकेत दिया है कि वे दोहरी नागरिकता को प्राथमिकता देते हैं। इससे पहले खुर्शीद ने आगामी लोकसभा चुनावों पर चर्चा करने के लिए कांग्रेस के स्थानीय नेताओं के साथ बैठकें कीं। उन्होंने कहा कि कांग्रेस में सहकर्मियों और आम लोगों से संपर्क करने के लिए उन्हें गोवा भेजा गया है।

जेल के माहौल को बखूबी दर्शाती है किताब 'जेल जर्नलिज्म'

» कानपुर के पत्रकार मनीष दुबे ने लिखी है किताब

» खुद के साथ बीती घटना से रखी गई बुक की नींव

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। दिल्ली में हुए विश्व पुस्तक मेले के अंतिम दिन चर्चा के केंद्र में रही साल 2018 में आयी एक सनसनीखेज किताब जेल जर्नलिज्म। अपने कंटेंट को लेकर चर्चा में रहने वाली इस किताब को लिखा है कानपुर के रहने वाले मनीष दुबे ने, जो पेशे से पत्रकार हैं। दो भागों में लिखी इस किताब ने जेलों पर अब तक लिखे गए साहित्य में इस किताब ने अलग ही स्थान बनाया है। इस किताब की नींव तब रखी गई जब किताब के लेखक मनीष दुबे एक षड़यंत्र में फंसकर दिल्ली की तिहाड़ जेल पहुंच गए। इस किताब की पूरी यात्रा से खुद रूबरू कराया लेखक मनीष दुबे ने।

अपने जेल जाने की घटना का जिक्र करते हुए मनीष दुबे ने बताया कि 31 दिसंबर 2010 की बात है। दिल्ली के एक संस्थान में काम करते हुए वहां के एक टॉप गैंगस्टर ने मुझे इंटरव्यू देने की पेशकश की। 31 दिसंबर को ही साक्षात्कार ऑर्गनाइज हुआ। इससे एक दिन पहले ये लोग कहीं किसी अपराध को अंजाम दे चुके थे। दिल्ली पुलिस ने गैंगस्टर को उठाया तो उसने उसके अपराध में मेरी भी संलिप्तता बता दी। बस यहीं से एक नाटकीय घटनाक्रम हुआ। पुलिस ने मुझे भी उठाया। पुलिस मुझे छोड़ देती लेकिन कुर्सी पर बैठे एसएचओ को लात मारना मुझे भारी पड़ गया और कुंडली में तिहाड़ दर्ज हो गई।

जो जैसा दिखा, वैसा ही परोसा

किताब में गाली-गलौज और अश्लीलता होने पर मनीष का कहना है कि ये सब कहानी का हिस्सा है। इसके बिना कुछ अधूरा सा लग दिख रहा था। वैसे भी मीठा-मीठा गप्प और कड़वा कड़वा थू की मेरी आदत कभी नहीं रही। जो है, जैसा है उसे वैसे ही क्यों नहीं लिखा जा सकता? नेता जी, पुलिस वाले गाली दे रहे हैं, हम सब सुन और देख रहे हैं उसे वैसे का वैसे ही लिखने में दिक्कत क्या है? जिस जगह हर समय हल्ला, हमला, मारो, काटो, बचाओ का शोर और चाकू, ब्लेड, चरस, गांजा, नशा की बात हो रही है उस जगह को रामराज्य कैसे दिखाया जा सकता है। किताब ऑनलाइन भी उपलब्ध है। गूगल प्ले स्टोर, अमेजन, फ्लिपकार्ट इत्यादी कई प्लेटफार्म्स पर किताब उपलब्ध है। गूगल पर जेल जर्नलिज्म बॉय मनीष दुबे हिंदी या अंग्रेजी में टाइप करना है किताब निकलकर सामने आ जाएगी।

यूं आया किताब लिखने का ख्याल

इस घटना के बाद किताब लिखने के सवाल पर मनीष ने बताया कि उस ग्यारह माह की कस्टडी में ही किताब लिखी थी। पर दिल्ली पुलिस ने मुझ पर दो

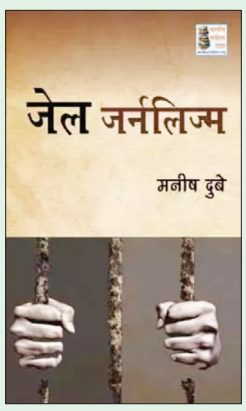

मुकदमे लगाए थे। एक तो उस गैंगस्टर के साथ वाला और दूसरा जो एसएचओ को लात मारी थी। गैंगस्टर वाला मुकदमा 2014 में तारीखों के दौरान खत्म हो गया था। लेकिन एसएचओ वाला जो केस था उसमें मुझे सजा हो गई। साल 2015 की 16 दिसंबर को रोहिणी कोर्ट से मुझे कस्टडी में ले लिया गया। इससे पहले फरवरी 2014 को मेरी शादी हो चुकी थी। जेल हुई उस वक्त बेटी 6 माह की थी। पिछली कस्टडी में जो कुछ लिखा उसे भूल गया था। मुझे लगा एक बुरे सपने की तरह उसे भुला दिया जाए। लेकिन जब सजा हुई तो परिवार और छोटी बच्ची से दूरी का बड़ा कष्ट हुआ। बस यहीं से दिमाग में घर कर गया कि अब निकलकर जो काम तब नहीं हुआ उसे पूरा करना है। पहले पूरी कहानी एक ही किताब में थी। फिर लगा ये रामायण कौन पढ़ेगा? क्यों न दोनों कस्टडी को अलग-अलग भागों में दिखाया जाए। हो सकता है आगे किताब का तीसरा भाग भी आए!

अपने बाप-दादा की जमीन बेचकर लड़ूंगा चुनाव : अफजाल अंसारी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

गाजीपुर। अखिलेश यादव ने गाजीपुर से अफजाल अंसारी को आगामी लोकसभा चुनाव के लिए उम्मीदवार बनाया है। सपा से टिकट मिलने के बाद गाजीपुर से पार्टी के कैंडिडेट अफजाल ने बीजेपी पर निशाना साधा और चुनाव में जीत का दावा किया। अफजाल अंसारी ने कहा कि मुझे सरकारी मशीनरी ने लूटा है। इस बार मैं अपने बाप-दादा की जमीन बेचकर चुनाव लड़ूंगा और जीत हासिल करूंगा। यहां मोदी मैजिक काम नहीं करेगा। अफजाल ने दावा किया कि इस बार गाजीपुर की गरीब जनता उनका साथ देगी।

राम मंदिर के निर्माण से बीजेपी को फायदा होने के सवाल पर उन्होंने कहा कि राम मंदीर आस्था का प्रतीक है और राम को लेकर किसी को कोई विवाद नहीं है। ऐसे में बीजेपी को इसका कोई फायदा नहीं मिलने वाला है।

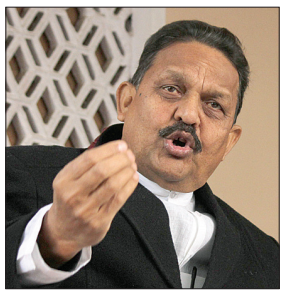

» बोले- मुझे सरकारी मशीनरी ने लूटा है

» इस बार गाजीपुर में नहीं चलेगा मोदी मैजिक

2019 में भाजपा के मनोज सिन्हा को हराकर जीता था चुनाव

अफजाल अंसारी ने 2019 में बहुजन समाज पार्टी के टिकट पर चुनाव लड़ा था और मोदी लहर के बावजूद जीत हासिल की। उन्होंने बीजेपी नेता मनोज सिन्हा को हराया था। हालांकि, 2023 में सदस्यता चली गई थी, जिसे बाद में सुप्रीम कोर्ट ने बहाल कर दिया था। अफजाल अंसारी को गैंगस्टर एक्ट के तहत एमपी-एमएलए कोर्ट ने चार साल की सजा सुनाई थी। अफजाल पर 2005 में हुई बीजेपी विधायक कृष्णानंद राय की हत्या में शामिल होने का आरोप है। इसके अलावा इसी मामले में उनके भाई मुख्तार अंसारी को भी कोर्ट ने 10 साल की सजा का ऐलान किया था। फिलहाल वह जमानत पर बाहर जेल के बाहर हैं।

कोर्ट की इजाजत के बाद संदेशखाली पहुंचे भाजपा नेता शुभेंदु अधिकारी

» भाजपा नेता के पहुंचते ही लगे जय श्रीराम के नारे

» कलकत्ता हाईकोर्ट ने अधिकारी को अकेले जाने की दी इजाजत

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

कोलकाता। पश्चिम बंगाल का संदेशखाली जंग का अखाड़ा बन गया है। इतना ही नहीं पश्चिम बंगाल के उत्तर 24 परगना जिले में स्थित गांव संदेशखाली को लेकर सियासी माहौल भी गरमाया हुआ है। सत्तापक्ष और विपक्ष इस मामले में लगातार एक-दूसरे पर आरोप लगा रहे हैं। इस बीच भाजपा नेता शुभेंदु अधिकारी और शंकर घोष संदेशखाली पहुंचे। हालांकि, कलकत्ता हाईकोर्ट के दखल के बाद पुलिस ने उन्हें हिंसाग्रस्त इलाके के दौरे की इजाजत दी। शुभेंदु के संदेशखाली पहुंचने पर लोगों ने जय श्रीराम के नारे लगाए।

इससे पहले कलकत्ता हाईकोर्ट से इजाजत मिलने के बाद भाजपा नेता शुभेंदु अधिकारी अन्य पार्टी नेताओं के साथ हिंसाग्रस्त इलाके के लिए रवाना हुए, लेकिन उन्हें बीच रास्ते ही रोक दिया गया। इसके विरोध में वे वहीं धरने पर बैठ गए।

इस दौरान भाजपा नेता ने कहा कि पुलिस कह रही है कि राज्य सरकार डिवीजन बेंच में चली गई है और आपका आदेश अब लागू नहीं होगा। संविधान का मुख्य स्तंभ न्यायपालिका है। ममता पुलिस कलकत्ता हाईकोर्ट आदेश को चुनौती दे रही है। मैं उन्हें दोबारा सोचने के लिए एक घंटे का समय देता हूं, उसके बाद मैं कलकत्ता उच्च न्यायालय जाऊंगा।

किसी समर्थक को साथ ले जाने की अनुमति नहीं

इस बीच हाईकोर्ट की डिविजनल बेंच ने शुभेंदु को एक बार फिर संदेशखाली जाने की इजाजत दे दी। कोर्ट ने शुभेंदु को सुरक्षाकर्मियों के साथ हिंसाग्रस्त इलाके का दौरा करने को कहा। हाईकोर्ट ने कहा कि वे संदेशखाली जा सकते हैं, लेकिन सीआरपीसी की धारा 144 के कारण वे किसी भी पार्टी कार्यकर्ता या समर्थक को अपने साथ नहीं ले जा सकते। कोर्ट ने शुभेंदु के साथ किसी एक अन्य व्यक्ति को भी साथ ले जाने की अनुमति दी।

कोर्ट ने पुलिस को निर्देश दिया कि कानून-व्यवस्था बनाए रखने के लिए जरूरी कदम उठाए जाएं। कोर्ट के फैसले के बाद शुभेंदु और शंकर घोष संदेशखाली पहुंचे।

गुंडागर्दी कर रही है टीएमसी: वृंदा करात

सीपीआई (एम) नेता वृंदा करात को भी पुलिस ने आज पश्चिम बंगाल के उत्तर 24 परगना जिले के

अशांत संदेशखाली जाने से रोक दिया। इस दौरान करात ने कहा कि उन्हें एक पुलिस अधिकारी ने बताया था कि संदेशखाली में उनकी मौजूदगी से वहां शांति भंग हो जाएगी। उन्होंने धमाखली में संवाददाताओं से कहा कि शांति का माहौल तब बिगड़ा, जब महिलाओं को स्थानीय टीएमसी कार्यालयों में बुलाया गया और उनका यौन उत्पीड़न किया गया, अब यह न्याय की लड़ाई है। उन्होंने आरोप लगाया कि टीएमसी गुंडागर्दी कर रही है।

गुजरात विधानसभा में सवाल उठाने पर 10 कांग्रेस विधायक निलंबित

» फर्जी सरकारी कार्यालय और सिंचाई परियोजनाओं के लिए धन की हेराफेरी के मुद्दे पर हुआ हंगामा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

गांधीनगर। आजकल ये ट्रेंड हो गया है कि विपक्ष जब सदन में अपनी बात रखना चाहता है या उसकी मांग करता है तो विपक्षी विधायकों व सांसदों को सदन से बाहर का रास्ता दिखा दिया जाता है। देश के संसद से लेकर राज्यों की विधानसभाओं तक में ये देखने को मिल रहा है। अब ऐसा ही कुछ देखने को मिला गुजरात विधानसभा में। जहां बजट सत्र के दौरान 10 कांग्रेस विधायकों को पूरे एक दिन के लिए निलंबित कर दिया गया।

दरअसल, कांग्रेस विधायकों ने पिछले साल छोटा उदेपुर जिले में सामने आए एक फर्जी सरकारी कार्यालय और सिंचाई परियोजनाओं के लिए धन की हेराफेरी के मुद्दे को सत्र के दौरान सदन में उठाया और जमकर हंगामा किया। इतना ही नहीं विधायकों ने सदन का वॉकआउट भी किया। बढ़ते हंगामे को देखते हुए कांग्रेस के 10 विधायकों को सदन से एक दिन के लिए निलंबित कर दिया गया।

अगले दो दिनों तक बारिश व बर्फबारी की संभावना

» पहाड़ों पर गिरी बर्फ बढ़ाएगी मैदानी इलाकों में गलन

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। बसंत ऋतु में मौसम लगातार करवट बदल रहा है। पाकिस्तान के हिस्से में बने कम दबाव की हवाओं का असर उत्तर पश्चिमी हिस्सों में लगातार बना हुआ है। जम्मू कश्मीर, लद्दाख, हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड के अलग-अलग हिस्सों में बर्फबारी और बारिश हो रही है।

मौसम विभाग के मुताबिक, मैदानी और पहाड़ी इलाकों में यह असर अगले दो दिनों तक बना रहेगा। पहाड़ों पर गिरी बर्फ और चलने वाली हवाओं के बाद भी मैदानी इलाकों के तापमान में इसका कोई असर होता नहीं दिख रहा है। मौसम विभाग के अनुमान के

मुताबिक अब आने वाले दिनों में तापमान में बढ़ोतरी का अनुमान लगाया जा रहा है। जबकि दिल्ली और एनसीआर में बादलों का छिटपुट असर बना रहेगा।

मौसम वैज्ञानिकों की मानें तो 18 फरवरी से पश्चिम उत्तरी हिमालय क्षेत्र में मौसम बदला हुआ है। पाकिस्तान में कम दबाव की हवाओं के असर के चलते इस क्षेत्र में ऐसे हालात बने हैं। यही वजह है कि पश्चिमी विक्षोभ की सक्रियता का असर इस समूचे क्षेत्र में पांच दिनों तक बने रहने का अनुमान लगाया गया था।

महाराष्ट्र सरकार ने मंजूर किया 10% मराठा आरक्षण

» विधानसभा के स्पेशल सेशन में शिंदे कैबिनेट ने मसौदे पर लगाई मोहर

» शिक्षा और सरकारी नौकरियों में मिलेगा रिजर्वेशन

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मुंबई। पिछले कुछ दिनों से महाराष्ट्र की शिंदे सरकार के लिए गले की फांस बन चुके मराठा आंदोलन के मुद्दे को निपटाने के लिए राज्य सरकार लगातार प्रयास कर रही है। इस बीच अब शिंदे सरकार ने 10 फीसदी मराठा आरक्षण को मंजूरी दे दी है। आज महाराष्ट्र विधानसभा के स्पेशल सेशन में एकनाथ शिंदे कैबिनेट से इस प्रस्ताव को मंजूरी मिल गई। इसके तहत राज्य में मौजूद 28 फीसदी मराठा समुदाय के लोगों को 10 फीसदी आरक्षण सरकारी नौकरियों में दिया जाएगा। इसके अलावा इतना ही रिजर्वेशन उच्च शिक्षण संस्थानों में भी देने का प्रस्ताव है।

बीते एक दशक में यह तीसरा मौका है, जब महाराष्ट्र में इस तरह का बिल मराठा समुदाय के लिए मंजूर किया गया है। यह प्रस्ताव महाराष्ट्र राज्य पिछड़ा वर्ग आयोग की सिफारिश के आधार पर लाया गया है। आयोग की रिपोर्ट के मुताबिक, राज्य में 28 फीसदी आबादी मराठा समुदाय की है। इसके अलावा मराठा समुदाय को लेकर माना गया है कि उसके पिछड़ेपन की कुछ असाधारण वजहें हैं। ऐसे में इस वर्ग को आरक्षण देने के लिए जातिगत आरक्षण की 50 फीसदी सीमा को पार किया जा सकता है। महाराष्ट्र में 10 फीसदी आरक्षण ईडब्ल्यूएस को भी दिया जा रहा है। इसे मिलाकर अब तक राज्य में 62 फीसदी कोटा दिया जा रहा है।

मनोज जरांगे के आंदोलन के बाद गरमाया था मुद्दा

महाराष्ट्र पिछड़ा वर्ग आयोग का गठन दिसंबर में रिटायर्ड जज सुनील शुक्रे के नेतृत्व में किया गया था। इसका उद्देश्य यह था कि राज्य में मराठा समुदाय के पिछड़ेपन का अध्ययन किया जाए। मराठा कोटे की मांग करने वाले आंदोलनकारी मनोज जारांगे पाटिल के नेतृत्व में लंबा आंदोलन चला था। इसके बाद ही सरकार ने आयोग का गठन किया। महाराष्ट्र में पेश इस बिल में मराठा कोटे का प्रस्ताव रखते हुए कहा गया है कि तमिलनाडु में 69 फीसदी का आरक्षण मिल रहा है। इस बिल में इंदिरा साहनी मामले का भी जिक्र किया गया, जिसमें तमिलनाडु के केस को अपवाद माना गया था।

केंद्र सरकार जो काम कर रही उसकी जम्मू-कश्मीर को जरूरत: फारूक

पूर्व सीएम ने पीएम मोदी की तारीफ में पढ़े कसीदे

» बोले- पीएम मोदी और रेल मंत्रालय को देता हूं धन्यवाद

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आज जम्मू कश्मीर को 30 हजार 500 करोड़ रुपए के प्रोजेक्ट की सौगात दी है। इसमें एजुकेशन, रेलवे, एविएशन और रोड सेक्टर्स से जुड़े विकास कार्य शामिल हैं। पीएम ने घाटी में पहली इलेक्ट्रिक ट्रेन और संगलदान स्टेशन और बारामूला स्टेशन के बीच ट्रेन सेवा को हरी झंडी दिखाई। इस पर नेशनल कॉन्फ्रेंस के प्रमुख फारूक अब्दुल्ला ने पीएम मोदी की खूब तारीफ की है।

फारूक अब्दुल्ला ने कहा कि केंद्र सरकार जो काम कर रही है, आज उसी की

हमें जरूरत है। यह हमारे पर्यटन और लोगों के लिए महत्वपूर्ण है। यह एक बड़ा कदम है, जो आज उठाया गया है। मैं इसके लिए रेल मंत्रालय और पीएम मोदी को मुबारकबाद देता हूं। फारूक ने कहा कि मुझे उम्मीद है कि जल्द ही कटरा से संगलदान तक भी ट्रेन सेवा पहुंच जाएगी। हमें अब तक यातायात को लेकर मुश्किल का सामना करना होता था। अब रेल हमें कनेक्टिविटी देगी। इसकी हमें बहुत जरूरत थी। ये हमारे टूरिज्म के लिए भी बहुत जरूरी है। अब दूसरे इलाकों में आसानी से सफर कर सकते हैं। हमारे माल को आने-जाने में सहूलियत होगी।

उम्मीद करता हूं रेल सेवा वरदान साबित होगी

पूर्व सीएम ने आगे कहा कि ये बड़ा कदम उठाया गया है। मैं रेल मंत्रालय और प्रधानमंत्री मोदी को मुबारकबाद देता हूं। उन्होंने इसमें योगदान दिया। आज हम पहला कदम देख रहे हैं। रेलवे के वर्कर्स को भी धन्यवाद देना चाहूंगा, जिन्होंने इसमें काम किया है। उम्मीद करता हूं कि ये रेल सेवा वरदान साबित होगी। उन्होंने कहा कि हमारी उम्मीदें सालों से थी। पहले हमें लगता था कि 2008 तक हम रेल सेवा से जुड़ जाएंगे। हमारे इलाके में काम में बहुत मुश्किल आती हैं। यहां टनल बनाने पड़ते हैं। मगर, रेल मंत्रालय ने मुश्किलों को पार किया और पहला कदम शुरू कर दिया है। जून-जुलाई तक पूरा काम होने की उम्मीद है।

स्वामी 4 पीएम न्यूज नेटवर्क्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक संजय शर्मा द्वारा आस्था प्रिंटर्स, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से मुद्रित एवं 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से प्रकाशित। संपादक - संजय शर्मा, विधि सलाहकार: सत्यप्रकाश श्रीवास्तव, मोहम्मद हैदर, वित्तीय सलाहकार: संदीप बंसल, कार्टूनिस्ट: हसन जैदी, दूरभाष: 0522- 4078371 | Email: daily4pm@gmail.com | website: www.4pm.co.in
RNI-UPHIN/2015/62233 डाक पंजी. सं- SSP/LW/NP-495/2018-2020 *इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।